आज़ादी का अमृत महोत्सव

CBSE

G20 भारत 2023 INDIA

अभिव्यंजना

CBSE BUDDING AUTHORS PROGRAMME

CENTRAL SQUARE FOUNDATION

PRATHAM BOOKS storyweaver

अभिव्यंजना

CBSE Budding Authors Programme

First Edition: November 2023
ISBN: 978-93-340-0102-0
Author: Dr. Sweta Singh
Editor: Ms. Indira Bagchi, Ms. Ritu Bhatnagar
Country of Publication: India

Published by:
CENTRAL BOARD FOR SECONDARY EDUCATION
Shiksha Sadan, 17, Rouse Avenue, New Delhi-110002

Printed in: India

प्रस्तावना

सीबीएसई बडिंग ऑथर्स प्रोग्राम को सीबीएसई रीडिंग मिशन के विस्तार के रूप में 23 अगस्त, 2022 को लॉन्च किया गया। इस पहल का उद्देश्य छात्रों को अपनी कल्पना और रचनात्मक क्षमताओं का उपयोग करने और इसे लेखन के माध्यम से व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। इसके माध्यम से सीबीएसई स्कूलों में पढ़ने वाले पाँचवीं से दसवीं कक्षा तक के छात्रों को अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर मिल सका।

इस कार्यक्रम का एक प्रमुख पहलू, छात्रों के रचनात्मक लेखन कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उन्हें विविध प्रकार की कहानियों को पढ़ने में संलग्न होकर लेखन की बारीकियों, जैसे पटकथा का विस्तार, पात्र-चित्रण, आदि को समझने के लिए प्रोत्साहित करना है। जहाँ पढ़ने से छात्रों को अपनी कल्पनाशीलता तराशने में मदद मिलती है, वहीं लेखन रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को उजागर करने का एक अवसर प्रदान करता है। गद्य में विचारों की अभिव्यक्ति छात्रों की संगठनात्मक क्षमताओं को मज़बूत करती है और तार्किक सोच विकसित करती है, जिससे संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों को आत्मविश्वासी और स्पष्ट संचारक बनने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है ताकि वे लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से अपने विचारों और मनोभावों को स्पष्ट व सुसंगत रूप से व्यक्त कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में सीबीएसई बडिंग ऑथर्स प्रोग्राम का उद्देश्य भाषा, साहित्य और आत्म-अभिव्यक्ति के प्रति प्रेम पैदा करना है, जिससे व्यक्तित्व का समग्र पोषण हो सके।

प्राप्त सभी प्रविष्टियाँ, सीबीएसई के वरिष्ठ शिक्षकों की टीम की देखरेख में हुए गहन व सावधानीपूर्ण मूल्यांकन प्रक्रिया से गुज़रीं हैं। विकसित विस्तृत मानदंडों के साथ किए गए मूल्यांकन में साहित्यिक गुणवत्ता के उच्च मानकों को सुनिश्चित किया गया, मूल्यांकन मानदंडों का पालन करते हुए, अंग्रेज़ी और हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कहानियों को सूचीबद्ध किया गया, इन कहानियों का पुनर्मूल्यांकन एक लेखक के दृष्टिकोण से किया गया, और इस प्रकार विजेता प्रविष्टियों को अंतिम रूप दिया गया। इस कठोर चयन प्रक्रिया का उद्देश्य, इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्रों द्वारा प्रदर्शित असाधारण प्रतिभा और रचनात्मक कौशल को उजागर करना है।

चुनी गई प्रत्येक कहानी छात्रों की उत्कृष्ट रचनाशीलता का उदाहरण है, और शुरू किए गए कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण है। हमारे युवा लेखकों ने, रोमांचकारी कारनामों से लेकर ऐतिहासिक कहानियों तक, ज़िम्मेदारी और पारिवारिक मूल्यों की कहानियों से लेकर दिल को छूने वाले दयालु कृत्यों, से सजी अपनी छोटी-छोटी कहानियों का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण ताना-बाना प्रस्तुत किया है, जो कि लुभावना है, मनोरंजक है, और पाठक पर एक अमिट छाप छोड़ता है। इस पुस्तक में कहानियों के साथ संलग्न चित्र, कहानियों को नया आयाम और अर्थ देते हुए उनके भाव-चित्रण एवं पृष्टभूमि व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ावा दे रहे हैं।

इस पहल के माध्यम से छात्रों को अपने विचार व्यक्त करने और अपने लेखन कौशल का निर्माण करने के लिए एक मंच प्रदान करते हुए, सीबीएसई बडिंग ऑथर्स प्रोग्राम ने साहित्य के प्रति प्रेम को बढ़ावा दिया और युवा लेखकों को अपनी क्षमता दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया।

हम अपने उभरते हुए युवा कहानीकारों की इस प्रस्तुति का आनंद लेने के लिए आप सबको आमंत्रित करते हैं ।

- टीम सी. बी. एस. ई

आभार

सलाहकार

सुश्री निधि छिब्बर, अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
डॉ. जोसफ इमानुवल, निदेशक (शैक्षणिक), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

परियोजना प्रबंधन एवं तकनीकी टीम

डॉ. स्वेता सिंह, संयुक्त सचिव (शैक्षणिक) - केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
श्री सौरभ चोपड़ा, निदेशक - सेंट्रल स्क्वायर फाउंडेशन
श्री सक्षम सक्सेना, सीनियर प्रोजेक्ट लीड, सेंट्रल स्क्वायर फाउंडेशन
सुश्री निधि श्रीनाथ, प्रोजेक्ट मैनेजर - सेंट्रल स्क्वायर फाउंडेशन
सुश्री पूर्वी शाह, वरिष्ठ निदेशक - स्टोरीविवर
सुश्री आमना सिंह, सीनियर मेनेजर - स्टोरीविवर
सुश्री मोनिका थॉमस, एसोसिएट कंटेंट पार्टनरशिप्स मेनेजर - स्टोरीविवर

मूल्यांकन टीम

डॉ. गिरीश चौधरी, सेवानिवृत एसोसिएट प्रोफ़ेसर, लेडी इरविन कॉलेज, नई दिल्ली
सुश्री ममता रजनीश, स्टेप बाय स्टेप स्कूल, नॉएडा
सुश्री स्वाति पाठक, बिरला विद्या निकेतन, पुष्प विहार
सुश्री मिनाक्षी शर्मा, बिरला विद्या निकेतन, पुष्प विहार
सुश्री संगीता श्रीवास्तवा, नई दिल्ली

संपादकीय एवं समीक्षा टीम

डॉ. स्वेता सिंह, संयुक्त सचिव (शैक्षणिक), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सुश्री इंदिरा बागची, संपादक, एसोसिएशन आफ रायटर्स ऐंड इलस्ट्रेटर फॉर चिल्ड्रेन
सुश्री ऋत भटनागर, संपादक एवं लेखक

पुस्तक डिज़ाइन, कवर और चित

सुश्री यामिनी के
सुश्री गाया कुंची केलु

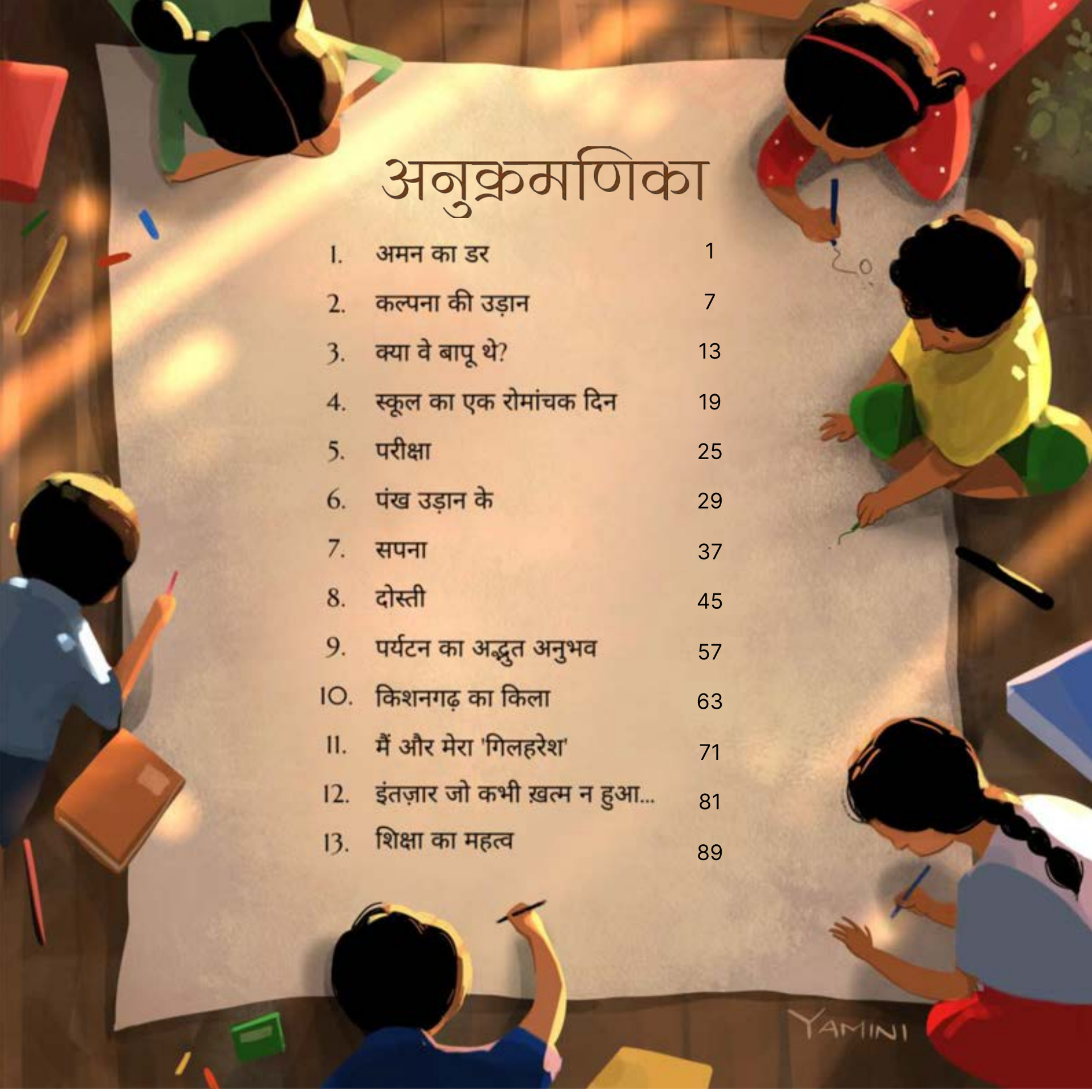

अनुक्रमणिका

1.	अमन का डर	1
2.	कल्पना की उड़ान	7
3.	क्या वे बापू थे?	13
4.	स्कूल का एक रोमांचक दिन	19
5.	परीक्षा	25
6.	पंख उड़ान के	29
7.	सपना	37
8.	दोस्ती	45
9.	पर्यटन का अद्भुत अनुभव	57
10.	किशनगढ़ का किला	63
11.	मैं और मेरा 'गिलहरेश'	71
12.	इंतज़ार जो कभी ख़त्म न हुआ...	81
13.	शिक्षा का महत्व	89

YAMINI

अमन का डर

तेजस कुमार

केन्द्रीय विद्यालय - 2,
एनएच IV एनआईटी, फ़रीदाबाद, हरियाणा

बात उस समय की है जब अमन 10 साल का था। वह अपने माता-पिता के साथ गुरुग्राम में एक छोटे से घर में रहा करता था। वह स्वभाव से बहुत ही शरारती था, लेकिन उसे अंधेरे से बहुत डर लगता था। शाम होने पर वह कभी भी, कहीं भी, अकेला नहीं जाता था। वह जहाँ भी जाता, या तो अपनी मम्मी के साथ या फिर अपने पापा के साथ ही जाता था। अंधेरा होते ही वह बहुत डर जाता था।

एक दिन दोपहर के समय वह अपने कमरे में पढ़ाई कर रहा था, और उसकी माँ घर के काम करने में लगी थी, कि तभी फ़ोन की घंटी बजी और उसकी माँ ने फ़ोन उठाया। दूसरी ओर से आवाज़ आई, "मथुरा रोड पर आपके पति का एक्सीडेंट हो गया है।"

यह सुनते ही माँ के हाथों से फ़ोन छूटकर नीचे गिर गया। वह बहुत घबरा उठीं। उन्होंने जल्दी से अपना पर्स उठाया और दरवाज़ा बंद करके मथुरा रोड के लिए निकल पड़ीं। वहाँ पहुँचने पर उन्हें उनका पति कहीं नहीं दिखा। लोगों से पूछने पर पता चला कि उनके पति को पास के अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। वह वहाँ से तुरंत ही अस्पताल के लिए निकल गईं।

अस्पताल पहुँचने पर उन्हें पता चला कि उनके पति को गंभीर चोटें आई हैं, जिसकी वजह से वह होश में नहीं हैं और उनका इलाज चल रहा है।

उधर अमन घर पर अकेला था। शाम होने वाली थी और अमन को भूख लगने लगी थी। उसने अपने कमरे से ही माँ को आवाज़ दी, पर उसे कोई उत्तर नहीं मिला। बार-बार आवाज़ देने पर भी जब माँ का जवाब नहीं आया, तो वह डर गया। फिर उसने अपने कमरे से बाहर आकर माँ

को ढूँढना शुरू किया, पर उसे पूरे घर में माँ कहीं भी नहीं मिली। दरवाज़ा भी बाहर से बंद था। अपने आप को पूरे घर में अकेला पाकर, वह बहुत घबरा गया। उधर, शाम होने लगी थी। उसका डर और ज़्यादा बढ़ने लगा, क्योंकि उसे अंधेरे से बहुत डर लगता था। और तभी अचानक लाइट भी चली गई। अब तो उसकी हालत बहुत खराब हो गई और वह डर के मारे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वह भागकर अपने बिस्तर पर जाकर बैठ गया। जरा-सी आहट होने पर उसे लग रहा था कि जैसे कोई उसे जान से मार देगा। घर में अगर कोई चूहा भी इधर-उधर करता तो वह डर के मारे चादर ओढ़कर मुँह ढककर बैठ जाता।

थोड़ी देर बाद उसे बहुत ज़ोरों से भूख लगने लगी और अब उससे और इंतजार नहीं किया जा रहा था। लेकिन उसे डर भी बहुत लग रहा था, इसलिए वह बिस्तर से उतरना भी नहीं चाहता था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह आखिर किचन तक जाए कैसे? फिर बहुत हिम्मत करके उसने आँखें बंद की, और धीरे-धीरे दीवार को पकड़-पकड़ कर वह किचन की तरफ़ बढ़ने लगा। अपने डर को भगाने के लिए भगवान को याद करता और धीरे-धीरे अपने कदम बढ़ाता।

तभी वह किसी चीज़ से टकराकर नीचे गिर गया। डर के मारे उसे लगा कि किसी राक्षस ने उसके पैर को पकड़ लिया है। वह उस राक्षस को मारने के लिए कुछ उठाने की कोशिश करता है। अपने हाथ को जैसे ही वह टेबल पर लेकर जाता है, उसे वहाँ एक टॉर्च मिल जाती है। वह जब उस टॉर्च को जलाकर राक्षस की ओर देखता है तो उसे पता चलता है

कि उसका पैर किसी राक्षस से नहीं, बल्कि एक एलबम से टकरा गया है। वह एलबम उसके जन्म से लेकर अब तक की तस्वीरों से भरी हुई थी। वह वहीं ज़मीन पर लेटकर, टॉर्च जलाकर उन तस्वीरों को देखने लगा। उन तस्वीरों को देखने में वह इतना खो गया कि समय कब बीत गया उसे पता ही नहीं चला। थोड़ी देर में लाइट आ गई; फिर भी उसे पता ही नहीं चला कि लाइट आ चुकी है। वह उन तस्वीरों को देखता रहा और खुश होता रहा।

उधर अस्पताल में उसके पिता को जब होश आया, तो उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा, "अमन कहाँ है? क्या वह घर पर अकेला है?"

इतना सुनते ही उसकी माँ के होश उड़ गए। वह ये सोचकर परेशान हो उठी कि मैं तो जल्दबाज़ी में उसे घर पर अकेला ही छोड़ आई। अब तो रात हो गई है। वह घर पर अकेला कितना डर रहा होगा। वह घर पर फ़ोन लगाती हैं, पर फ़ोन नहीं लगता क्योंकि जल्दबाजी में फ़ोन का रिसीवर गिर गया था और वह उसे वापस रखना भूल गई थीं। वह जल्दी से अपने पति को डिस्चार्ज करवाती हैं और घर के लिए निकलती हैं।

जब वह घर पहुँचती है तो आश्चर्यचकित रह जाती हैं। अमन ज़मीन पर लेटा हुआ, अपने जन्म की फ़ोटो को देख-देख कर खुश हो रहा था और हँस रहा था। वह बिल्कुल भी डरा हुआ नहीं था। जैसे ही उसने अपनी माँ को देखा, उनके गले लग गया, और फिर उसने अपना सारा हाल अपनी माँ को कह सुनाया।

उसने अपनी माँ से कहा, "माँ! अब मुझे अंधेरे से डर नहीं लगता। मैं समझ गया हूँ कि भूत या राक्षस जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। और अगर आप किसी चीज़ से डर रहे हों तो अपना ध्यान कहीं और लगा लें, ऐसा करने से आपको डर नहीं लगेगा। मैं जब बहुत ज़्यादा डर रहा था उसी समय मुझे यह एलबम मिली, और मैं जब इसे देखने लगा तो बस तभी से मुझे डर का पता ही नहीं चला। यह सुनकर उसकी माँ बहुत खुश हुई और उसे गले से लगा लिया।

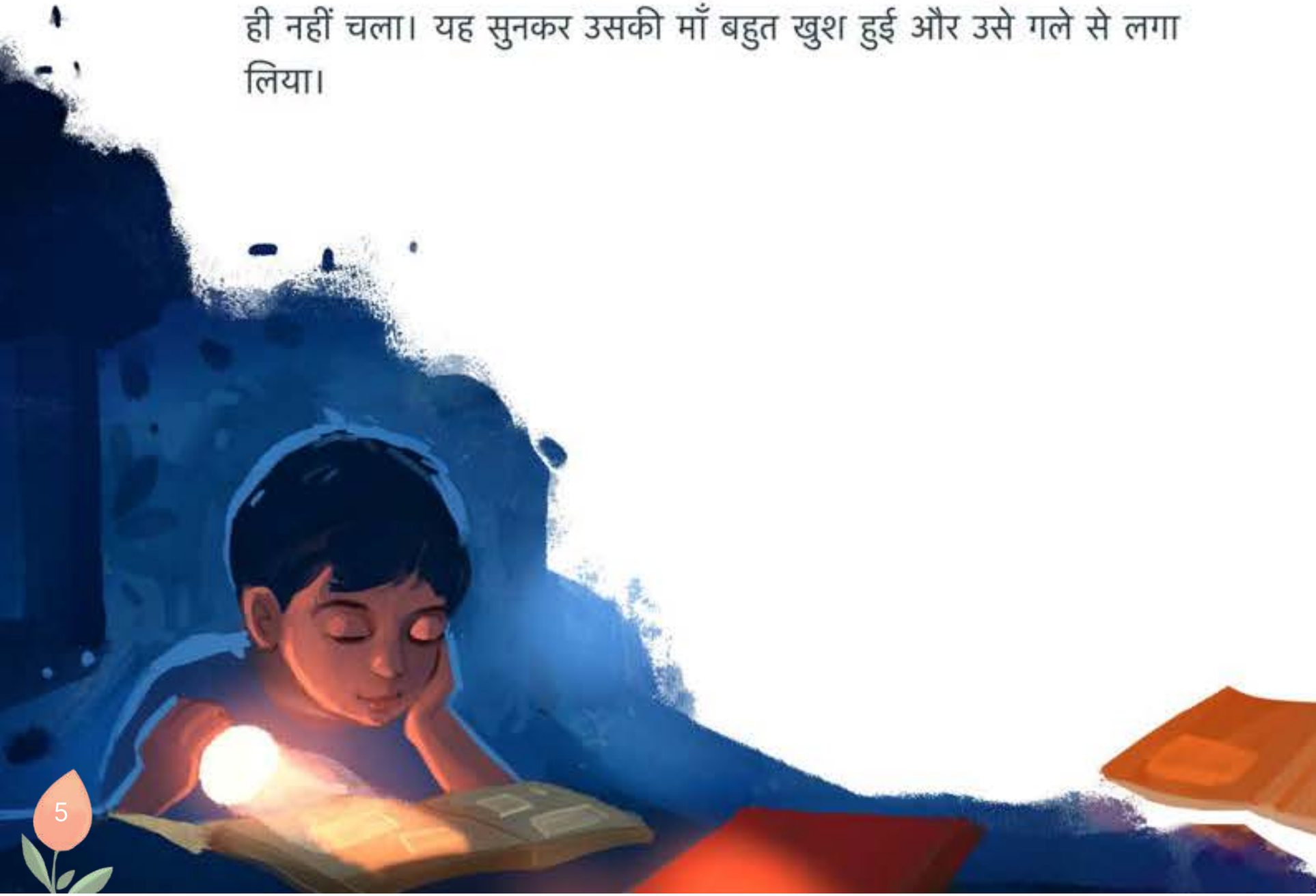

YAMINI

कल्पना की उड़ान
अरिशा महाजन
दिल्ली पब्लिक स्कूल, सेक्टर-40 सी, चंडीगढ़
YAMINI

नहीं सुनाता कोई कहानी, परियों का ना साया है।
दादी, नानी के क़िस्सों पर, अब मोबाइल की छाया है।

जब छोटी थी, तब माँ रोज़ रात को,
कहानी सुनाया करती थी।
अब बड़ी हो रही हूँ तो कोई,
कहानी ही नहीं सुनाता।
माँ लोरी नहीं गाती अब,
पिता न घोड़ा बन पाए अब।
छीन लिया बच्चों का बचपन,
कलयुग की ये माया है।

बेटी : "माँ कहानी सुनाओ न, नींद नहीं आ रही है।"

माँ ने भी अपने रोज़ के कामों से वक़्त निकाला और कहानी सुनानी शुरू की, "एक घना जंगल था..."

माँ ने प्यार से सहलाया तो कब मेरी आँख लगी और कब मेरी कल्पनाओं ने उड़ान भरी, पता ही नहीं चला ! मेरी कल्पनाएँ उड़ते-उड़ते वहाँ जा पहुँची जहाँ...एक कंक्रीट का जंगल था;

उसके चारों ओर ऊँची-ऊँची इमारतें थीं। ऐसे प्रदूषित वायुमंडल में कब सूरज उदय होता और कब अस्त होता, पता ही नहीं चलता था। ऐसे संकटकाल में पशु, पक्षी और इंसान सब घबराए हुए थे। एक प्यासा कौवा पानी की तलाश मे इधर-उधर भटक रहा था। (काँव-काँव. . .)

कौवा घबराया हुआ : "अरे! यह क्या? न पानी, न वृक्ष...ऐसा लग रहा है, जैसे प्राण अभी निकल जाएँगे।" (आह! आह!) कौवा चारों ओर पानी की तलाश करता रहा, परन्तु उसके हाथ निराशा ही लगी। वह सोचने लगा, "अब क्या होगा?"

सूखी नहरें, पोखर सूखे, जल घट नज़र ना आता था।
बंद बोतलें पानी की ले, एक मुसाफ़िर जाता था।

कौवा उड़ते-उड़ते रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचा। पानी तो दिखा पर वह भी बंद बोतल में। प्यास के कारण कौवे ने मुसाफ़िर पर नज़र बनाए रखी।

उसके पीछे-पीछे उड़कर, कौवा नज़र लगाए था।
शायद जल मिल जाए मुझको, ऐसी आस जगाए था।
तभी रेलवे स्टेशन पर वह गाड़ी में जा बैठ गया।
कौवे का भी तन-मन सारा, थक कर मानो ऐंठ गया।

पीछा करते हुए कौवे की, हिम्मत भी जवाब देने लगी जब उसने देखा . . .
"अरे! यह क्या? गाड़ी का अंतिम डिब्बा भी छूट गया,
मेरी आशा का अंतिम सिरा भी टूट गया।"

चोंच बंद खुलती थी पल-पल, प्यासी जिह्वा सूख गई,
कौवे की किस्मत उससे, जैसे बिल्कुल रूठ गई।
आँखों पर छाया अंधियारा, कौवा उड़ना भूल गया।
आसमान से गिरा धरा पर, पटरी पर था झूल गया।

और देखते ही देखते कौवे की हालत बिगड़ ने लगी . . .

प्यासे कौवे की आँखों के आगे ऐसा अंधेरा छाया कि वह सीधा पटरी पर आ गिरा। ऐसी हालत में अब कौवा मन ही मन ईश्वर को पुकारने लगा, "हे प्रभु ! मेरे प्राण बचाओ या मुझे अपने पास बुलाओ।"

तभी अचानक चमत्कार हो गया,
जल का शोर हुआ झर-झर-झर।
पंख फड़फड़ा उठा वह कौवा,
पानी पिया जी भर-भर।

ईश्वर ने कौवे की प्रार्थना स्वीकार की और तभी स्टेशन स्वर उद्घोषित हुआ . . .
"यात्री कृपया ध्यान दें . . . बीते कल पानी की पाइप फट जाने के कारण दिल्ली से नागपुर जाने वाली ट्रेन में पर्याप्त पानी न भरने के कारण यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद है . . . आपकी यात्रा मंगलमय हो।"

उस फटी हुई पाइप से आ रही पानी की आवाज़ कौवे के कानों में पड़ी। कौवा उड़ा और पाइप से बहते पानी से अपनी प्यास बुझा फिर जी उठा और पहले जैसा ही नीले गगन में उड़ने लगा।

नील गगन में उड़ता कौवा मन ही मन यह बोल रहा,
मानव तेरे लिए अब पानी का न कोई मोल रहा ।
वृक्ष नहीं लगाते बिल्कुल जंगल सारे काट रहे,
पशु-पक्षियों को बिन माँगे मौत ये सौदाग़र बाँट रहे।

ना होगा जल तो कैसे मानव भी बच पाएगा,
जल के कारण विश्वयुद्ध में अखिल विश्व जल जाएगा।
जल है तो कल है - याद रहे।

माँ : "उठो बेटी, मेरी प्यारी गुड़िया अब उठ भी जाओ। देखो सुबह हो गई . . ."

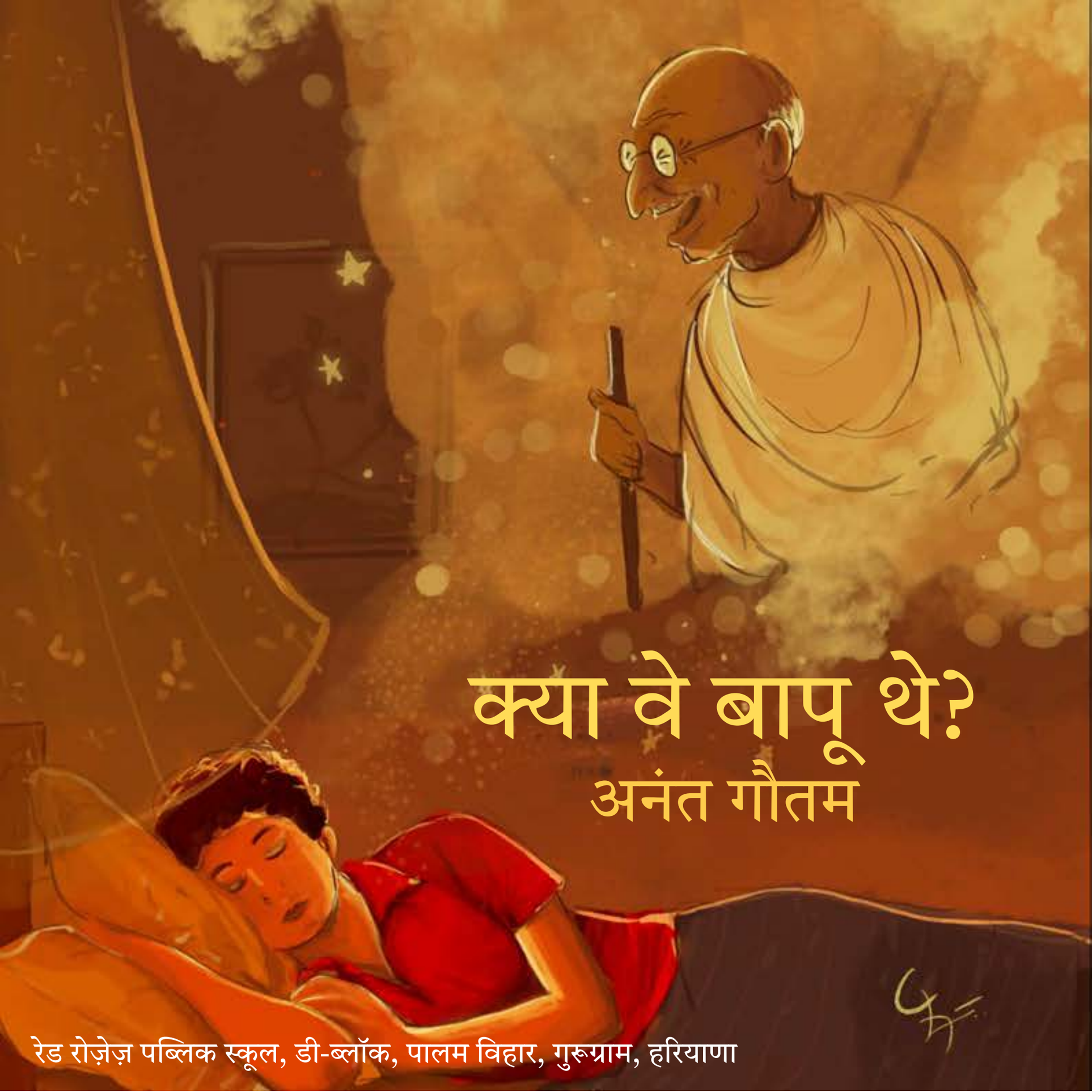

क्या वे बापू थे?

अनंत गौतम

रेड रोज़ेज़ पब्लिक स्कूल, डी-ब्लॉक, पालम विहार, गुरूग्राम, हरियाणा

सावन की सुहानी बौछार अभी ही थमी थी और दोपहर का आसमान खिला-खिला सा लग रहा था। ऐसे में अध्यापक जी दिन की आखिरी कक्षा में स्वच्छता के महत्त्व के बारे में कुछ गहराई से बता रहे थे। पर राजू का ध्यान अध्यापक जी की बातों के अलावा कहीं और ही व्यस्त था, और वह था बाहर बनने वाली भेलपुरी पर। खिड़की के पास बैठे हुए उसका पूरा ध्यान खाने की ओर था क्योंकि उसको बहुत ज़ोरों की भूख लगी हुई थी। उसकी मम्मी ने कहा था कि आज खाने में पकौड़े बनाएँगी। उसको मानो घर से कढ़ाई में पकने वाले पकौड़ों की सुगंध आ रही थी। जैसे ही विद्यालय की घंटी बजी, वह फटाफट उठा और दौड़ते हुए भेलपुरी वाले के पास पहुँच गया। उसने भेलपुरी खाई और रास्ते पर चलते-चलते बीच में ही कागज़ की कटोरी को सड़क के किनारे फेंक कर अपने घर की ओर चलता चला। वह कुछ कदम आगे बढ़ा ही था कि रास्ते में बिकने वाली आइसक्रीम ने चुंबक की तरह उसे अपनी ओर खींच लिया। आइसक्रीम का लिफाफा भी राजू ने चलते-चलते सड़क किनारे ही फेंक दिया व उसका स्वाद लेते-लेते घर की ओर बढ़ चला। माँ के हाथों के बने हुए पकौड़ों की थाली जैसे ही उसके सामने आई, वह उस पर ऐसे झपटा मानो बरसों का भूखा हो। उसने पकौड़े खाए और फिर सोने के लिए अपने कमरे में चला गया। लेटते ही उसकी आँख लग गई। सोते हुए उसको एक धीमे, लेकिन गंभीर स्वर में आवाज़ आई, "उठ राजू! सोता क्यों है?"

वह मानो गहरी नींद से उठा हो; और उसकी आँखें खुली की खुली रह गईं। उसके सामने एक वृद्ध व्यक्ति खड़ा था। उस वृद्ध के सिर पर बाल नहीं थे। गोल चश्मा पहने, हाथों में लाठी लिए हुए, वह वृद्ध व्यक्ति गुस्से से उसकी ओर देख रहा था। उनके पीछे प्रकाश का गोला फैला हुआ था और राजू उनको बस एकटक देखता रह गया। वह वृद्ध व्यक्ति उससे गुस्से से बोला, "गंदगी फैलाता है! मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि गंदगी नहीं फैलाते।"

राजू थोड़ा सहम गया। उस व्यक्ति ने डाँटते हुए कहा, "चल मेरे साथ।"

फिर वे दोनों उस जगह गए जहाँ राजू ने आइसक्रीम का लिफाफा गिराया था। राजू बोला, "सिर्फ़ एक ही तो है"। फिर वे उसे हाथ पकड़कर एक कचरे के ढेर के पास ले गए। उसमें से बहुत दुर्गंध आ रही थी। राजू से तो वहाँ दो मिनट भी साँस नहीं ली जा रही थी। वृद्ध व्यक्ति बोला, "पहले तो यह ढेर भी एक ही था, फिर दो हुए, फिर तीन और अब कितने सारे हैं। पहले एक आदमी कचरा फैलाता है, उसको देखकर दूसरा कचरा फैलाता है और फिर धीरे-धीरे इतना बड़ा ढेर बन जाता है। इससे कीड़े-मकोड़ों व मच्छरों की संख्या बढ़ जाती है और आसपास की जगह प्रदूषित हो जाती है, जो हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।"

राजू को यह सब सुनकर बहुत बुरा लगा; उसने उस व्यक्ति से माफ़ी माँगी और कहा कि वह कभी भी गंदगी नहीं फैलाएगा। उसने यह भी कहा, "मैंने जो भी कचरा फैलाया है, मैं उसको अभी उठा देता हूँ।" वह जैसे ही कचरा उठाकर खड़ा हुआ तो वो वृद्ध व्यक्ति वहाँ नहीं था। राजू रोने लगा और चिल्लाया, "आप कहाँ चले गए?"

तभी उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखकर आवाज़ लगाई, "उठ, रोता क्यों है?"

उसने आँखें खोली तो उसकी माँ उसे नींद से जगा रही थीं। राजू की आँखें नम थीं। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह दौड़कर बाहर गया व अपनी गिराई गंदगी एक-एक करके उठाने लगा। अंत में भेलपुरी का कागज़ उठाते-उठाते उसे एहसास हुआ कि अब तक जो हुआ था वह एक स्वप्न था। वह वृद्ध व्यक्ति उसे स्वच्छता की सीख देकर चला गया था। राजू गहरे आश्चर्य के साथ मन ही मन सोचने लगा, "क्या वे बापू थे?"

स्कूल का एक रोमांचक दिन

आदित्य कुमार

आईटीएल पब्लिक स्कूल, सेक्टर-9, द्वारका, नई दिल्ली

बुधवार का दिन था। विद्यालय में हमारा आखिरी पीरियड चल रहा था। कक्षा में गणित पढ़ाया जा रहा था। कक्षा में हमेशा की तरह मेरा ध्यान गणित पर नहीं था और मैं इधर-उधर बाहर देख रहा था। शिक्षक ने मुझसे एक सवाल पूछा जिसका उत्तर मैं नहीं दे सका। शिक्षक ने गुस्से में मुझे क्लास के बाहर खड़े होने की सज़ा दी। मैं बाहर खड़ा छुट्टी का इंतज़ार कर रहा था, कि तभी मैंने देखा कि एक नीले रंग का हीरे के आकार का वाहन उड़ता हुआ स्कूल के पुस्तकालय में खिड़की से प्रवेश करता है। यह मुझे किसी 'एलियन शिप' की तरह लग रहा था। मैं भागकर इसके बारे में शिक्षक को बताने गया, लेकिन उन्होंने मुझे चुपचाप बाहर खड़े रहने के लिए कहा। मुझसे रहा ना गया और मैं धीरे-धीरे पुस्तकालय की ओर बढ़ा। वहाँ मैंने देखा कि वे वास्तव में एलियन ही थे और वो आपस में बातें कर रहे थे। मैं अपने पुस्तकालय के शिक्षक को सूचित करने ही जा रहा था कि मेरा पैर कुर्सी से टकरा गया। आवाज़ सुनकर एलियन मुड़े और जैसे ही उन्होंने मुझे देखा मुझे पकड़ लिया और मुझ पर गैस छिड़क कर मुझे बेहोश कर दिया। फिर उन्होंने मुझे एक अलमारी से बाँध दिया। कुछ देर बाद जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि स्कूल की छुट्टी हो चुकी थी।

एलियन ने मुझ पर जो गैस छिड़की थी, शायद उसी का असर था कि मैं अब उनकी बातों को समझ पा रहा था। मैंने सुना है कि वे वीनस ग्रह से आए थे और हमारी पृथ्वी को

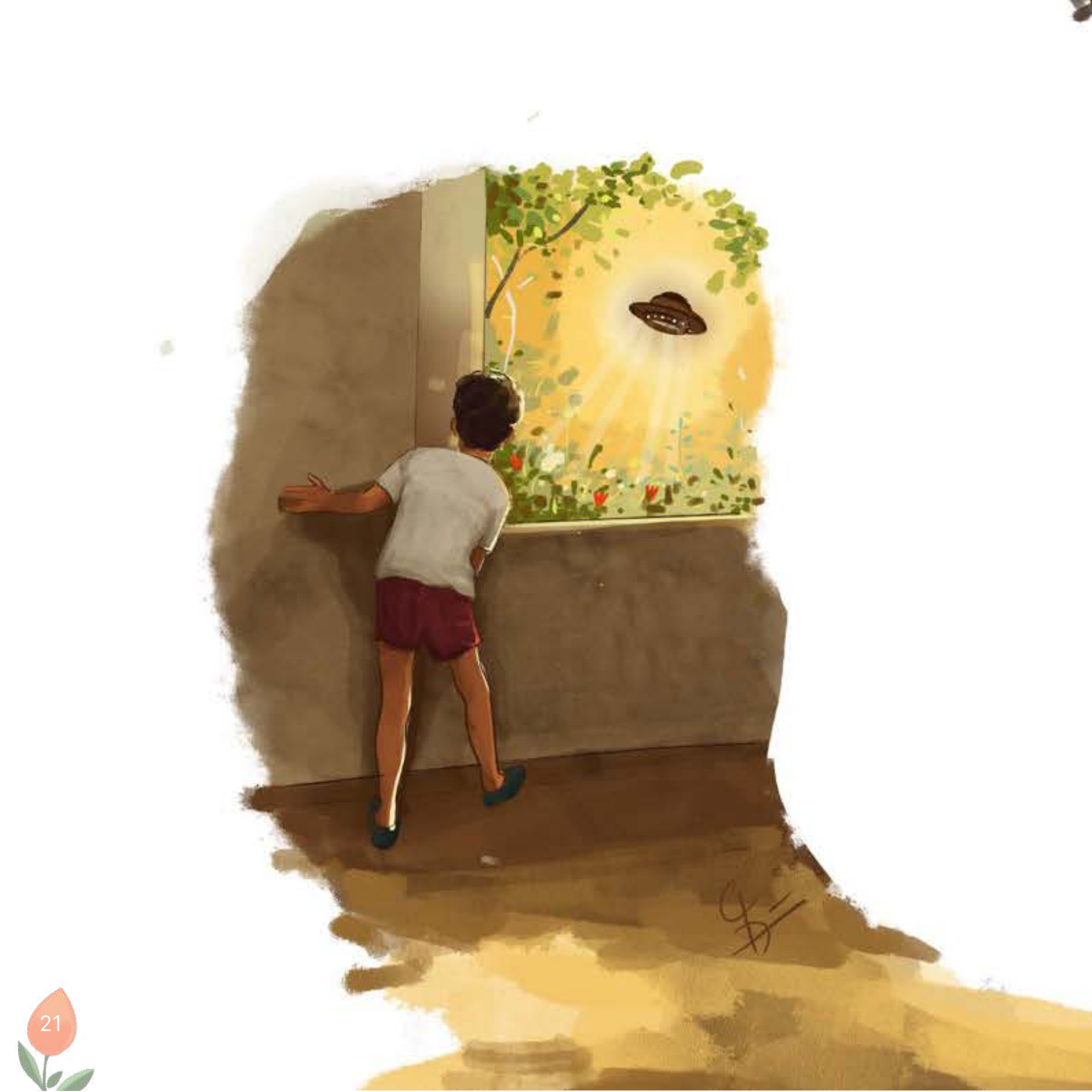

नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे थे। वे पाँच लोग थे। जब उन्होंने पुस्तकालय की पुस्तकों को देखा तो उन्हें लगा कि वह खाने की कोई चीज है, और उनमें से एक ने एक किताब खाकर स्वाद लेने की कोशिश की। लेकिन फिर निराशा के साथ उसने कहा कि वह शायद यह खाने की चीज़ नहीं थी। तब वे अपनी शिप में गए और किताब के बारे में डाटा बेस में सर्च किया तो उन्हें पता चला कि वह एक किताब है और पृथ्वी के लोग उससे ज्ञान प्राप्त करते हैं और समझदार बन जाते हैं।

उन पाँच लोगों में से कप्तान ने एक बड़ी लाल किताब की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसे उतारो और पढ़ो। निश्चय ही पृथ्वी के लोगों ने उसमें पृथ्वी के सारे भेद लिखे होंगे।" उसके आदेश को मानते हुए उनमें से एक ने उस लाल किताब को निकाला और उसमें से रोमांचक कविताएँ पढ़ने लगा।

लेकिन उनके कप्तान ने कहा, "हँसो मत, पृथ्वीवासी हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। वे जानते हैं कि इंसानों को बगीचे में कैसे उगाया जाता है। उन्होंने गायों को चाँद पर भेजना सीख लिया है।" तभी एक एलियन ने कप्तान से कहा कि आपकी तस्वीर इस किताब में छपी है और एक कविता लिखी है, "हम्पटी-डम्पटी सैट औन द वाल ।"

कप्तान ने जब पूरी कविता सुनी तो उसने झट से बोला, "अरे नहीं! वे हमारे ग्रह के रहस्यों को जानते हैं। अगर उन्हें पता चला कि हम यहाँ आए हैं तो वे हमें मार डालेंगे। चलो! चलो! चलो यहाँ से भागो!" और यह कहकर वे अपनी शिप में सवार हुए और वहाँ से भाग निकले।

मैं यह सब देख रहा था और चुपके-चुपके हँस रहा था। जिस किताब को वे पृथ्वी का रहस्य समझ रहे थे वह वास्तव में बाल-कविता की पुस्तक थी! तभी मुझे अपने माता-पिता और स्कूल के गार्ड की आवाज़ सुनाई दी और मैंने अपना जूता ज़ोर-ज़ोर से पटककर तेज़ आवाज़ की। आवाज़ को सुनकर मेरे माता-पिता और गार्ड वहाँ आ

उन्होंने मुझे रस्सियों से मुक्त किया और मेरे मुँह पर लगे टेप को हटा दिया।

कहानी प्रधानाचार्य और शिक्षकों को सुनाई। पूरी कहानी सुनकर वे भी हँस

परीक्षा

अमर सिंह

कर्नल एस.एन. मिश्रा ओबीई मेमोरियल स्कूल, साउथ सिटी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

YAMINI

एक बार एक धनी व्यक्ति ने एक मंदिर बनवाया। मंदिर में भगवान की पूजा करने के लिए एक पुजारी चाहिए था। मंदिर के खर्च के लिए बहुत-सी भूमि, खेत और बगीचे मंदिर के नाम किए गए। उसने ऐसा प्रबंध किया कि मंदिर में जो भूखे, दीन-दुखी या साधु-संत आएँ, वे यहाँ दो-चार दिन ठहर सकें और उनको भोजन के लिए भगवान का प्रसाद मंदिर से मिल जाए। अब उस धनी व्यक्ति को एक ऐसे आदमी की आवश्कता थी जो कि मंदिर की संपत्ति की देखभाल कर सके और मंदिर के सब कामों को ठीक-ठीक चलाता रहे।

बहुत से लोग उस धनी व्यक्ति के पास आए। वे लोग जानते थे कि यदि मंदिर की व्यवस्था और उसकी देखभाल की ज़िम्मेदारी मिल गई तो वेतन अच्छा मिलेगा। लेकिन उस धनी व्यक्ति ने सबको लौटा दिया। वह सब से कहता था, "मुझे एक भला आदमी चाहिए, मैं उसको अपने आप छाँट लूँगा।"

लौटाए जाने की वजह से बहुत से लोग मन ही मन उस धनी व्यक्ति को गालियाँ देते; तो बहुत से लोग उसे मूर्ख और पागल बतलाते। लेकिन वह धनी व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं देता। जब मंदिर के पट खुलते और लोग भगवान के दर्शन के लिए आने लगते, तब वह धनी व्यक्ति अपने मकान की छत पर बैठकर मंदिर में आने वाले लोगों को चुपचाप देखता रहता।

एक दिन एक आदमी मंदिर में दर्शन करने आया। उसके कपड़े फटे हुए थे। वह बहुत पढ़ा-लिखा भी नहीं था। जब वह भगवान के दर्शन करके जाने लगा, तब धनी व्यक्ति ने उसे अपने पास बुलवाया और पूछा, "क्या आप इस मंदिर की व्यवस्था संभालने का काम करेंगे?"

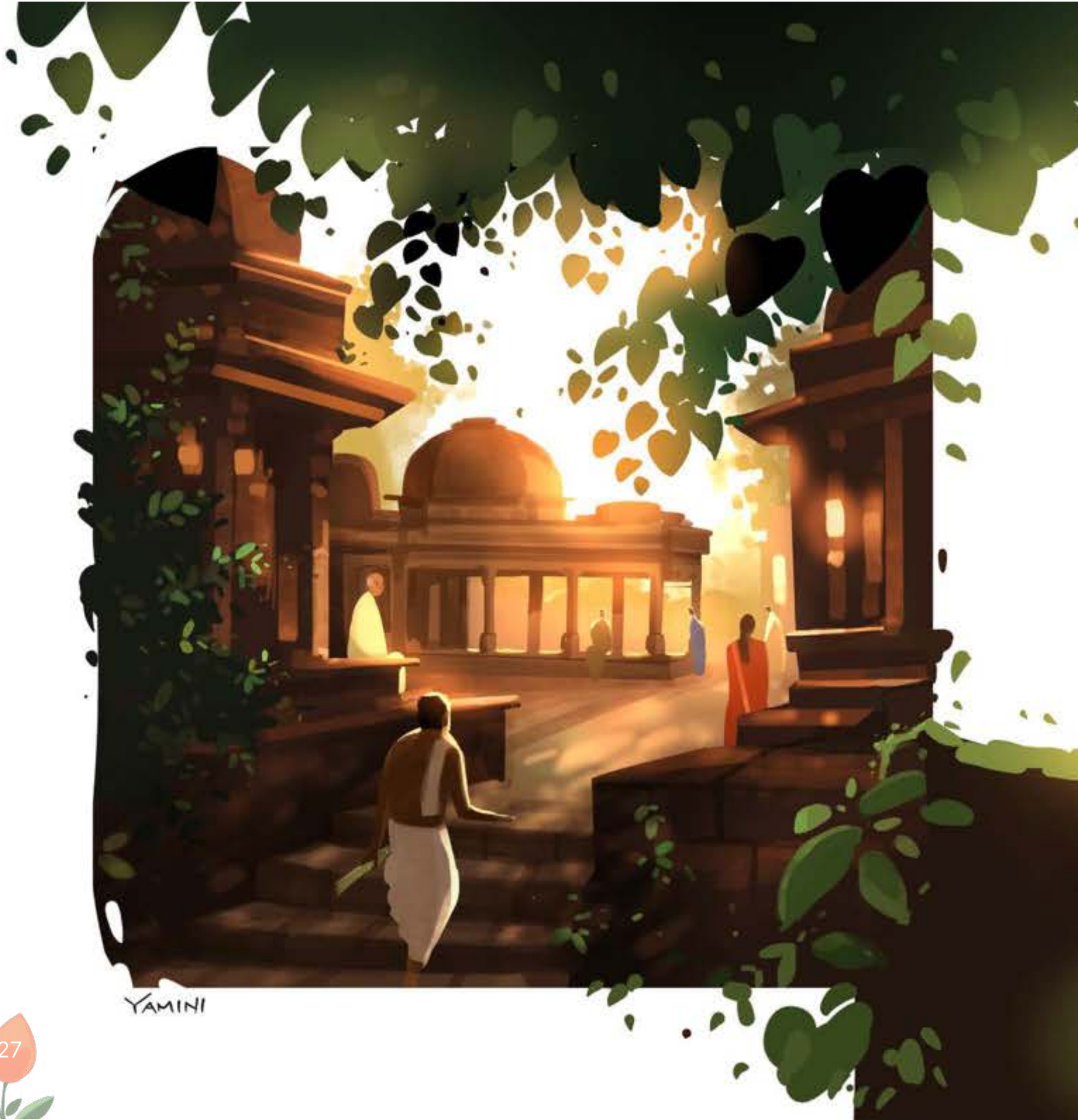
YAMINI

उस व्यक्ति ने पलटकर पूछा, "आपने इतने लोगों में मुझे ही क्यों सही आदमी माना?"

धनी व्यक्ति बोला, "उस दिन मंदिर के सामने वाली सड़क पर इमली के पेड़ की एक शाखा गिरी पड़ी थी। वहाँ से हर कोई गुज़रता और उससे ठोकर खाकर गिरता भी, पर किसी ने उसे वहाँ से नहीं हटाया। लेकिन उस दिन तुमने मेरे आदमी से कुल्हाड़ी लेकर उसे हटाया।"

व्यक्ति बोला, "महाराज! ये तो हर व्यक्ति का कर्तव्य होता है।"

धनी व्यक्ति बोला, "और इसी कर्तव्य को तुमने निभाया है, इसीलिए मैंने तुम्हें चुना है।"

और बस उसी दिन से वह आदमी मंदिर की व्यवस्था संभालने लगा।

उस धनी व्यक्ति ने दूर से खड़े होकर सब लोगों की परीक्षा ली थी और अंत में योग्य व्यक्ति को ही चुना था।

मनुष्य की पहचान उसके कार्यों तथा भावनाओं से होती है।

पंख उड़ान के

शिवानी सिंह

दिल्ली पब्लिक स्कूल, सेल टाउनशिप, रांची, झारखंड

सूरज की किरणों की तेज़ रोशनी हरि की पलकों पर पड़ी। वह अपनी आँखों को धीरे-धीरे खिड़की से आने वाली रोशनी से समायोजित कर, कराह उठता है और क्षण भर में अपने बिस्तर को छोड़ माँ को खोजने के लिए दौड़ पड़ता है। वह ज़रा हैरान हुआ जब उसने अपने परिवार के सभी सदस्यों को टीवी के पास बैठे देखा। वह बिना अधिक हलचल मचाए, सोफे के पीछे खड़ा हो गया। कमरे का वातावरण काफ़ी गंभीर था।

"हाल ही में कश्मीर की सीमाओं के पास हमले के बाद सेना जनरल ने निवारक उपाय के रूप में बोर्डर पर अधिक सैनिकों के उपस्थित होने का आदेश दिया है। अंदाज़ा है कि जल्द ही एक और हमला हो।"

हरि माता-पिता और दादी के चेहरों पर तनावपूर्ण भाव देखता है। "इसी कारण फ़ैज़ा के अब्बा चमोली में नहीं हैं!" हरि के पिता जी बोले, "उन्हें बोर्डर पर मौजूद रहना था।"

हरि और फ़ैज़ा बचपन से पड़ोसी और बहुत अच्छे मित्र थे। वे दोनों एक दूसरे के साथ अक्सर खेलते और उनको अलग करना तो लगभग असंभव ही था। वे दोनों चमोली की वादियों में एक साथ बहुत समय गुज़ारा करते थे। उनके छोटे परंतु खुशियों से भरे घर, चमोली के बाहरी क्षेत्र में एक छोटे गाँव में थे। वे दोनों एक दूसरे को छोटी और साधारण चीज़ें, जैसे कि फूल, देकर एक दूसरे को प्रसन्न करने का प्रयास करते थे।

"परंतु माँ, फ़ैज़ा ने मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया है," हरि अचानक से बोल पड़ा। सारे सदस्य मुड़कर हरि की ओर देखने लगे।

"हरि, तुम उठ गये!" माँ बोली।

"हाँ हरि, मैंने अनुमान लगाया था कि फ़ैज़ा तुम्हें इस बात की जानकारी नहीं देगी।"

"ऐसा क्यों पिता जी?"

"हरि, यह मामला फ़ैज़ा के लिए काफ़ी भावुक हो सकता है, भारतीय सेना में सेवा करना . . . चुनौतियों से भरा है।"

"हाँ पिता जी, मैंने गौर किया है कि फ़ैज़ा कुछ दिनों से खामोश-सी रहती है।"

थोड़ी देर अपने कमरे में बैठकर सोचने के बाद, हरि ने फ़ैज़ा के घर जाने का निश्चय किया और उसने रास्ते में कुछ फूल भी तोड़ लिए और अपने थैले में डाल लिए, इस उम्मीद से कि फ़ैज़ा शायद उन्हें देखकर खुश होगी। हरि ने जब दरवाज़ा खटखटाया तो फ़ैज़ा ने दरवाज़ा खोला। "आओ, हरि अंदर आ जाओ," फ़ैज़ा थोड़ी उदास-सी आवाज़ में बोली। हरि अंदर आया, और फ़ैज़ा के बगल में बैठ गया।

घर का वातावरण इतना गंभीर था कि मानो घर ने अपनी साँस रोक रखी हो।

हरि फ़ैज़ा को फूल देते हुए बोला, "फ़ैज़ा, तुम कैसी हो?"

फ़ैज़ा का चेहरा थोड़ा सा खिल उठा। "धन्यवाद हरि! सच कहूँ तो मैं काफ़ी चिंतित हूँ," फ़ैज़ा बोली।

फ़ैज़ा की आँखें ज़रा गीली-सी हो जाती हैं।

"हरि तुम जानते हो कि युद्ध क्षेत्र में रहना कितना जोखिम भरा हो सकता है," फ़ैज़ा की आवाज़ काँपने लगती है। परंतु वह अपने भावनाओं को संभालते हुए बोली, "हरि, अब शाम हो चुकी है, तुम्हें घर जाना चाहिए।"

हरि उसकी मन की बातों को समझते हुए, घर लौट जाता है।

अगले दिन जब हरि समाचार पत्र खोलता है और पढ़ना शुरू करता है- त्रासदी : दो सैनिक मातृभूमि के लिए हुए शहीद, छह घायल !

वीर जवान करणवीर सिंह और अब्दुल अरसलन हुए शहीद। यह देश उन्हें सलाम करता है।
घायल सैनिक . . .
अब्दुल अरसलन फ़ैज़ा के अब्बा! फ़ैज़ा के अब्बा अब नहीं रहे!

YAMINI

हरि बिना सोचे फ़ैज़ा के घर के लिए दौड़ पड़ा। उसकी धड़कने इतनी तेज़ थीं कि वह उन्हें सुन सकता था। उसके हर एक कदम के साथ उसकी साँसों की गति भी बढ़ती जा रही थी। उसकी यह दशा थी तो फ़ैज़ा का क्या हाल होगा? और उसकी अम्मी? हरि ने एक बार फिर दरवाज़ा खटखटाया। परंतु इस बार यह बिल्कुल भिन्न था। इस बार किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। लेकिन हरि फ़ैज़ा की अम्मी की कष्ट और वेदना से भरी चीखें सुन सकता था। हरि समझ गया था कि यह उसके उपस्थित होने का अवसर नहीं था। वह वहाँ से चला गया। हरि के घर लौटने का समय हो चुका था। वर्षा की बूंदें गिरनी शुरू हो चुकी थीं, मानो अंबर भी शोक मना रहा हो।

दो हफ़्ते बाद :

हरि को फ़ैज़ा से बात करने का मौका नहीं मिला। वह वादियों में घूमने भी गया। परंतु फ़ैज़ा के बिना उसे वादियाँ भी सुंदर नहीं लग रही थीं, मानो उसके दृश्य से रंग ही छीन लिए गए हों। उन्हीं वादियों के बीच उसे फ़ैज़ा दिखी और वह उसके पास जाकर बैठ गया।

"फ़ैज़ा, तुम अब कैसी हो?" वह थोड़ी धीमी आवाज़ में बोला।

"मैनें कुछ निर्णय लिए हैं हरि, ऐसे निर्णय जो मेरा जीवन बदल सकते हैं।" इतना कह कर फ़ैज़ा वहाँ से उठ कर चली गई, और पीछे छोड़ गई एक उलझे हुए हरि को। तभी हरि ने लौटते समय जयंती मौसी को अपनी सहेली से कहते हुए सुना, "मैंने सुना है कि फ़ैज़ा ने सैनिक स्कूल में भर्ती होने का निश्चय किया है। वह लड़की बहुत ही वीर और दृढ़ है ऐसा निर्णय लेने के लिए और वह हमारे गाँव की सैनिक स्कूल जाने वाली पहली महिला बनेगी।"

हरि यह सुन कर दंग रह गया। उसका हृदय गर्व और उदासी दोनों से भर गया। फ़ैज़ा का अपने अब्बा का मान रखने के लिए अपना जीवन समर्पित करना; इससे आदरणीय निर्णय हो ही नहीं सकता था। हरि ने उससे अलग होने के अपने दुख को दबाकर फ़ैज़ा पर गर्वित होना चुना।

आज एक महीने बाद फ़ैज़ा के विदा होने का समय आ चुका था। आज वह निकट ही के शहर के रेलवे स्टेशन से ट्रेन में चढ़ रही थी। आज फ़ैज़ा खुद को अपनी मातृभूमि की सेवा में समर्पित कर देगी इसलिए पूरे गाँव का आना तो आवश्यक था। फ़ैज़ा ने इतिहास जो रच दिया था।

फ़ैज़ा हरि को देख मुस्कुराती है और कहती है, "ज़्यादा चिंतित न हो हरि, मैं खुश रहूँगी।" हरि

और फ़ैज़ा की अम्मी अपने आँसू छुपाने में व्यस्त हो जाते हैं और रेल गाड़ी चल पड़ती है। पूरा गाँव एक साथ उत्साह से जयकार करता है। फ़ैज़ा के अंतिम अलविदा के बाद रेल गाड़ी एक धुंधली छाया में ओझल हो जाती है, और यहाँ एक कोमल पंखुड़ी हरि के चेहरे को छू कर उड़ जाती है, मानो उसके सारे कष्ट को अपने साथ उड़ा ले गयी हो।

सपना

सुरभि गुप्ता

हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ एक पिकनिक पर जा रही थी। हमने पिकनिक के लिए एक जंगल को चुना क्योंकि कुछ लोग कहते थे कि वह जंगल बहुत ही अच्छा और खूबसूरत है। रविवार का दिन घूमने के लिए सबसे बढ़िया होता है। हम सब ने उसी दिन उस जंगल के बाहर मिलने का निर्णय किया। रविवार की दोपहर को मैं वहाँ पहुँच तो गई, लेकिन वहाँ कोई न था। अपने दोस्तों से पूछने के लिए मैंने उन्हें फ़ोन किया। उन्होंने बताया कि उनकी गाड़ी बीच सड़क पर रुक गई है और अब वे वहाँ घूमने नहीं आ पाएँगे। बेशक मैं निराश थी, मगर फिर मेरे मन में एक विचार आया। क्यों न मैं खुद ही घूम लूँ? मेरा समय भी बीत जाएगा और यहाँ आने में जो पैसे व समय बर्बाद हुए हैं, वे भी बच जाएँगे।

जंगल के अंदर जाने के लिए वहाँ जो गेट था, वह भूरे रंग का था और लकड़ी से बनाया गया था। बहुत बड़े अक्षरों में उस पर लिखा था - 'साम्विको' और चारों कोनों को लकड़ी के फूलों से सजाया गया था। अंदर घुसने पर मुझे ऐसा लगा मानो किसी अशांत व्यक्ति को शांति और सुख का खज़ाना मिल गया हो। वह जंगल बहुत ही हरा-भरा और सुन्दर था। उस जंगल के पेड़ दूसरे पेड़ों की तरह नहीं थे। जहाँ बाहर के पेड़ ऊँचाई में थोड़े से छोटे थे, वहीं दूसरी ओर इस जंगल के पेड़ विशाल व घने थे।

शुरू-शुरू में तो जंगल अपने पेड़ों की वजह से बहुत खूबसूरत लग रहा था। पेड़ों पर फल और फूल दोनों लगे हुए थे। फल पके हुए और स्वादिष्ट लग रहे थे। लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती गयी, मैंने देखा कि पेड़ों के तने सूखते जा रहे थे। जो भी फल-फूल थे, अब वे सड़े-गले

और पिलपिले प्रतीत होने लगे। अचानक मुझे मेरे शरीर में कंपकंपी का एहसास हुआ, और तभी मैंने वहाँ से वापस लौट जाने का फैसला किया। मैं वापस जाना चाहती थी, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई मेरा पीछा कर रहा हो। मुझे किसी भी हाल में यहाँ से निकलना था, इसलिए मैंने तेज़ी से भागना शुरू किया। मुझे मेरे पीछे किसी के होने का एहसास हुआ . . . कुछ तो था। मैंने अपनी भागने की गति को और अधिक किया। भागते-भागते मैं एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ी और बेहोश हो गई।

मुझे जब होश आया तो मैं उसी जगह पर पड़ी हुई थी और मेरे ऊपर खरगोशों की एक कॉलोनी फुदक रही थी। मैं उठी और मैंने देखा कि मेरे आस-पास बहुत से जानवर खड़े हैं। हैरानी की बात थी, मगर मैं उनकी बातें समझ पा रही थी। वे सब आपस में शायद मेरे बारे में ही चर्चा कर रहे थे। एक ने कुछ कहना शुरू ही किया था कि कुछ आवाज़ें सुनाई पड़ीं। आवाज़ें सुनकर हम सभी झाड़ियों में जाकर छिप गए।

अचानक, मैंने कुछ आदमियों को पेड़ों को काटते हुए देखा और मैं सहम गई। मैंने आज से पहले कभी भी इतनी भारी मात्रा में पेड़ों की कटाई नहीं देखी थी। सभी जानवरों को देखा, तो वे रो रहे थे। मैंने उनसे पूछा, "यह सब क्या हो रहा है? और तुम सब रो क्यों रहे हो?"

शेर ने उत्तर दिया, "क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता? ये सब मनुष्य अपने घर बनाने और आग जलाने के लिए हमारे घरों को तबाह कर रहे हैं? न जाने इन्हें यह कब समझ आएगा कि हम

भी उन्हीं के समान प्राणी हैं जिन्हें उनकी तरह ही पानी, घर और खाने की ज़रूरत है।"

बन्दर बोला, "हाँ, राजाजी बिलकुल सही हैं। लालच ने मानव को इतना गिरा दिया है कि अपने अलावा वह किसी की भी परवाह नहीं करता है।" मेरा दिमाग यह सब सुनकर सन्न रह गया। मैंने आज से पहले कई बार पेड़ों के काटे जाने की ख़बरें तो सुनी थीं, मगर उन पर कभी ज़्यादा गौर नहीं किया था। आज जब उस वजह से मैंने किसी को तकलीफ़ में देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि ऐसे काम कितने खतरनाक और गलत हैं। मुझे अब जाकर यह ज्ञात हो रहा था कि हमारी इन्हीं गलतियों की वजह से पशु- पक्षी कितना कष्ट झेलते हैं। इनके बारे में कुछ नहीं सोचा जाता है। मैं इतनी शर्मिंदा हो गयी थी कि कुछ कह भी न सकी।

चुप्पी तोड़ते हुए हाथी बोला, "उन्हें इतना-सा भी अंदाज़ा नहीं है कि पेड़ काटकर वह अपनी ज़िन्दगियों को ही तबाह करते जा रहे हैं। हमारे घर तोड़कर ये मनुष्य अपने लिए घर तो बना लेंगे मगर इनके जीने के लिए वायु की सबसे महत्वपूर्ण गैस ऑक्सीजन ही नहीं रहेगी तो इनका क्या होगा?"

बन्दर बोला, "पेड़ों के काटे जाने की वजह से मिट्टी भी ढीली हो जाएगी और मृदा अपरदन शुरू हो जाएगी। साथ ही, बाढ़ के पानी को रोकने के लिए पेड़ों की कमी होगी। उस समय सभी लोग अपने किए पर पछताएँगे और इस बात का शोक मनाएँगे कि आखिर हमने ऐसा क्यों किया?"

मैं सोच में पड़ गई। आखिर मानव जाति इतनी स्वार्थी क्यों है? बहुत देर तक शर्मिंदगी से चुप रहने के पश्चात मैंने कहा, "मैं मानती हूँ कि हम मनुष्यों पर तुम सब के आरोप बिलकुल सही हैं। मगर क्या आप सब जानते हैं कि दुनिया में अभी भी ऐसे लोग जीवित हैं जिन्हें आप सभी जीवों की व पर्यावरण की चिंता है। वैसे लोग ऐसे कई तरीके अपनाते हैं जिससे पर्यावरण को हानि न हो। जैसे, पानी को कई जगह बार-बार इस्तेमाल कर उसका सदुपयोग करना, पौधे उगाना, बिजली का दुरुपयोग न करना आदि।"

शेर दहाड़ा, "वे सब बस दो दिन के ही मेहमान हैं! कुछ दिनों तक चिंता कर, वे सब उन्हीं क्रूर इंसानों की तरह हो जाते हैं।"

YAMINI

मैंने भी उन नेक-दिल इंसानों की तरफ से अपना पक्ष रखा, "ऐसा कुछ नहीं है! माना कि कुछ मनुष्य अच्छे नहीं होते हैं, मगर तुम बाकी अच्छे इंसानों को तो उनके जैसा नहीं मान सकते हो न?" थोड़ी देर बाद मैं फिर बोली, "सभी इंसानों ने यह समझना शुरू कर दिया है कि पेड़ों को काटने में उनका ही नुकसान है। वे जानते हैं कि अगर पेड़ कट गए तो मिट्टी का कटाव, बाढ़ आना या धरती के वातावरण का तापमान भी बढ़ जाने जैसी समस्याएँ हो सकती हैं और कौन मनुष्य यह चाहेगा कि उसके रहने की जगह, उसका घर बर्बाद हो जाए?" मेरा तर्क सुन सभी जानवर चुप रह गए। उनके चेहरों को देखने से लग रहा था कि शायद अब वह मेरी बात पर गौर कर रहे थे।

शेर बोला, "ह . . . म . . . म . . . (स्वीकृति देते हुए) तुम कदाचित सही कह रही हो। मगर तुम सब पर अभी-भी भरोसा करना संभव नहीं है (शंका जताते हुए)। क्या पता तुम सब जल्द ही हमारे बारे में भूल जाओ और पेड़ काटने शुरू कर दो। वक्त कभी भी बदल सकता है।"

"भले ही लोग भूल जाएँ, लेकिन सरकार यह कभी नहीं भूलेंगी। आप जैसे लाचार पशु-पक्षियों की रक्षा हेतु उन्होंने कई जगहों पर जीवमंडल रिज़र्व खोले हैं। पेड़ों को काटने वालों को दंड भी दिया जाता है। हर साल वन-महोत्सव मनाया जाता है जिसमें देश भर में लाखों-करोड़ों वृक्ष लगाए जाते हैं। तो क्या आप सब अभी भी सोचते हैं कि लोग आप सब को मार देना चाहते हैं?"

बन्दर बोला, "नहीं, बल्कि अब हम सब में एक उम्मीद जाग गयी . . . आ . . . आप . . . आपका . .।" उन सब की आवाज़ टूटने लगी। आवाज़ें धीमी होने लगीं।

चारों ओर अँधेरा छाने लगा। मैं नीचे गिर गई। मेरी आँखें झट से खुलीं। मैं अपने कमरे में थी। वही नीली दीवारें, वही बिस्तर जिस पर मैं पिछली रात सोई थी, वही अल्मारी जिस पर मेरे परिवार की और मेरी तस्वीरें थीं। मैं उठ कर बैठी और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह सपना अभी-भी मुझे याद था। अक्सर मेरे दादा कहते हैं कि अगर तुम्हें कोई सपना याद रहे तो उसमें ज़रूर कोई सन्देश छिपा होता है। और मुझे साफ़-साफ़ पता चल रहा था कि सन्देश क्या था। शायद मेरी लिखी कहानी पढ़कर आपको भी थोड़ा-बहुत समझ आया होगा। अगर नहीं आया तो सुनिए, हमें पेड़ों को बचाना है। भले ही वे बहुत काम के हैं, मगर उन्हें दोबारा बड़े होने में बहुत समय लगता है। दिन-प्रतिदिन पेड़ों की संख्या घटती जा रही है।

इस बात का ध्यान रखना है - 'जहाँ है हरियाली, वहीं है खुशहाली'। क्या आप भी धरती को बचाने में मेरी मदद करेंगे?"

दोस्ती

उदिति अग्रवाल

डीएवी पब्लिक स्कूल, परवोवाल रोड लुधियाना, पंजाब

श्रुति एक पंद्रह साल की लड़की थी जो छात्रावास में अपनी मर्ज़ी से रहती थी। पर यह मर्ज़ी उसकी मजबूरी भी थी। वह छात्रावास में इसलिए रहती थी क्योंकि घर पर उसे बहुत डाँट पड़ती थी। उसके माता-पिता उसे छोटी-छोटी बातों पर बहुत डाँटते थे। जब वह छोटी थी तब उसे कम डाँट पड़ा करती थी पर जब से वह बड़ी हुई तब से उसे बहुत डाँट पड़नी शुरू हो गई थी। वह इस बात से बहुत परेशान थी। उसका ध्यान किसी भी काम में नहीं लगता था और वह गुम-सुम रहती थी। एक समय के बाद उसे यह बात बहुत अधिक सताने लगी।

उसके माता-पिता दोनों ही नौकरी करते थे। वे ज़्यादातर अपना काम करने में व्यस्त रहते थे। उन्होंने श्रुति के साथ खुशी के पल ज़्यादा नहीं बिताए थे। वे सारा दिन पैसे कमाने की दौड़ में लगे रहते थे। वे श्रुति पर ध्यान नहीं देते थे। वे उसके साथ समय नहीं व्यतीत करते थे और जो समय व्यतीत करते थे, वह श्रुति को डाँटने में ही लगा देते थे।

जैसे-जैसे श्रुति बड़ी होने लगी, उसे अपने माता-पिता की कमी खटकने लगी। उसे घर पर बहुत अकेला महसूस होने लगा, इसलिए उसने अपने माता-पिता से उसे छात्रावास भेजने के लिए कहा। उसके माता-पिता ने उसे छात्रावास भेजने के फ़ैसले में हामी भर दी, क्योंकि उन्हें लगा कि उसके जाने से तो उनकी परेशानी थोड़ी कम हो जाएगी और वह

काम पर ज़्यादा ध्यान दे पाएँगे। उन्होंने एक तेरह साल की बच्ची को यह कहकर भेज दिया कि छात्रावास में जाएगी तो उसे अक्ल आएगी। घर पर सब कुछ मिलता है, पर वहाँ कुछ नहीं मिलेगा तो समझ में आएगा।

श्रुति का अकेलापन छात्रावास जाने पर भी दूर नहीं हुआ। घर और छात्रावास में बस इतना ही फ़र्क था कि घर में माता-पिता थे, पर वहाँ नहीं। छात्रावास में डाँट भी नहीं पड़ती थी।

श्रुति को छात्रावास में रहते हुए दो वर्ष बीत गए थे, पर वह एक बार भी छुट्टियों में अपने माता-पिता से मिलने नहीं गई। वह छात्रावास में किसी से बात नहीं करती थी। वह हमेशा अकेली रहती थी। वह छात्रावास की किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेती थी। उसकी किसी चीज़ में रूचि नहीं थी। वह पढ़ाई में भी बस ठीक-ठाक ही थी। उसे अकेलेपन ने परेशान कर रखा था। अपने कमरे में वह अकेली रहती थी। उसका कोई दोस्त नहीं था। वह रोती रहती थी, और अपनी ज़िंदगी को कोसती रहती थी।

21 जनवरी 2022, यह ऐसी तारीख थी जिस दिन उसकी किस्मत चमकाने चार लड़कियाँ उसी छात्रावास में आईं। श्रुति का कमरा खाली होने के कारण वे चारों श्रुति के साथ ही रहने लगीं। उन चारों का नाम थे - पिहु, अन्या, अनुषा और स्नेहा। स्नेहा

बहुत ही बुद्धिमान व समझदार लड़की थी, पिहु एक बहुत ही हँसमुख लड़की थी, अनुषा खेल-कूद में अव्वल थी और अन्या चित्रकारी में बहुत अच्छी थी।

कक्षाएँ खत्म होने के बाद रात को उन सब ने एक दूसरे को अपना परिचय दिया और आपस में बात करने लगीं। पिहु ने पूछा, "तुम सब को सबसे अच्छी और बुरी चीज़ कौन सी लगती है? मुझे तो हँसना अच्छा और रोना बुरा लगता है।"

स्नेहा बोली, "मुझे सबसे अच्छी प्रकृति लगती है और बुरा कुछ भी नहीं लगता।"

अन्या ने बताया कि उसे सबसे अच्छे उसके रंग लगते हैं और बुरे कीड़े लगते हैं क्योंकि वह उनसे डरती थी। अनुषा ने बताया, "मुझे सबसे अच्छा खेलना लगता है और बुरा करेला लगता है, पर हमारे घर सबसे ज़्यादा करेला ही बनता है।" उसकी इस बात पर सब हँस पड़े, पर श्रुति नहीं हँसी।

"और श्रुति तुम्हें क्या अच्छा और बुरा लगता है?" स्नेहा ने पूछा।
श्रुति ने कहा, "सबसे अच्छा कुछ भी नहीं और सबसे बुरी मुझे अपनी जिंदगी।"
"जिंदगी...?" स्नेहा ने हैरान होकर पूछा। इससे पहले स्नेहा कुछ और कह पाती श्रुति बोली, "मुझे नींद आ रही है, बल्ब बंद कर दो।"

पिहु ने बल्ब बंद कर दिया। स्नेहा अब भी श्रुति के बारे में सोच रही थी। स्नेहा उसे कुछ दिनों से देख रही थी और श्रुति पर नज़र रख रही थी। वह अंदर ही अंदर जानती थी कि श्रुति बात टाल रही थी। उसे लगा कि उसे एक बार श्रुति से बात करनी चाहिए। रात में वे सब खिड़की के पास बैठे थे, तभी स्नेहा ने पूछा, "श्रुति तुम्हें क्या हो गया है? मैं तुम्हें कई दिनों से देख रही हूँ तुम इतनी अकेली क्यों रहती हो? तुम किसी के साथ क्यों नहीं घुलती-मिलती? बस चुप-चाप रहती हो ऐसा क्यों?"

श्रुति बोली, "अपने माता-पिता की वजह से। जब मैं घर पर थी तब वह मुझे बहुत डाँटते थे छोटी-छोटी बात पर टोकते थे। मैं तंग आ गई और इसलिए मैं यहाँ छात्रावास आ गई ताकि थोड़ा माहौल बदल जाए, पर यहाँ पर भी मेरे दोस्त नहीं बनते।" उसने दुखी होते हुए बोला।

स्नेहा थोड़ी देर चुप रही और फिर अचानक बोली, "दोस्त बनते नहीं या तुम बनाना नहीं चाहती? तुम्हें लगता है कि लोग तुम्हारे पास आएँगे, लेकिन तुम्हें लोगों के पास जाकर दोस्ती करनी चाहिए। अगर सामने वाला भी यह सोचे कि वह ही मेरी दोस्त बनने आएँगी तो तुम्हारी दोस्ती कभी नहीं होगी। और जहाँ तक डाँट का सवाल है, सबके माता-पिता डाँटते हैं। वे हमारी भलाई के लिए डाँटते हैं। तुम्हें उन्हें समझना चाहिए।"

"क्या सिर्फ़ उनके डाँटने की वजह से छात्रावास आई हो?" अनुषा ने पूछा।

श्रुति ने कहा, "भलाई . . . ? अच्छा? भलाई हर छोटी से छोटी बात पर डाँटना कौन सी भलाई है? वह मुझे हर बात पर टोकते हैं। मुझे उनको नहीं बल्कि उन्हें मुझे समझना चाहिए। वे मुझे नहीं समझते। उन्होंने कभी मुझसे ढंग से बात नहीं की। अब तुम बोलो मैं ग़लत हूँ या वो? और मैं डाँटने की वजह से नहीं आई हूँ। मैं इसलिए यहाँ आई हूँ क्योंकि, मेरे माता-पिता मुझे बिल्कुल भी समय नहीं देते हैं। वे सारा दिन काम, काम और बस काम ही करते हैं। मैं बहुत अकेली हो गई थी। मुझे मेरी ज़िंदगी नरक लगने लगी थी और अब भी लगती है। और वैसे तुम्हें क्या? मेरी ज़िदगी, मेरा फ़ैसला, तुम कौन होती हो?"

"मैं तुम्हारी दोस्त हूँ," स्नेहा ने कहा।

श्रुति बोली, "मैंने कब कहा तुम मेरी दोस्त हो? मेरा कोई दोस्त नहीं है।"

यह सुनते ही स्नेहा ने चिल्लाकर बोला, "अच्छा दोस्त नहीं हूँ? ठीक है पर एक बात सुन लो, क्या तुम्हारे अकेले रहने से, चुप रहने से, दुखी रहने से, किसी भी चीज़ में

कोई रुचि ना दिखाने से, तुम्हारा दुख कम हो जाएगा? क्या तुम खुश हो जाओगी? बताओ? तुम अपने दुख से बाहर नहीं आ पा रही हो। अपने आप को पहचानो, अपने अंदर के खुश इंसान को पहचानो।"

इसके बाद पूरे कमरे में सन्नाटा छा गया। स्नेहा यह कहने के बाद सोने चली गई और उसके साथ बाकी तीन भी। पर मानो श्रुति वहाँ ही जम गई हो। उसके मन में स्नेहा की बात बार-बार गूँजने लगी; वह निरुत्तर थी। वह उसी बात को सोचे जा रही थी। वह काफ़ी समय तक इसी बारे में सोचती रही।

कुछ दिनों बाद, एक दिन सवेरे जब स्नेहा और बाकी तीन लड़कियाँ उठीं, तो श्रुति पहले से ही तैयार थी। उसने उनसे कहा, "मुझे माफ़ कर दो। मैंने उस दिन तुम सब से बहुत बदतमीज़ी से बात की थी। मैं कई दिनों से विचारों में डूबी हुई थी और बार-बार इसके बारे में सोचे जा रही थी। अब मुझे यह महसूस हुआ है कि तुम सब ठीक कह रही हो। मुझे खुश रहना चाहिए, रुचि दिखानी चाहिए। क्या तुम सब मेरी दोस्त बनोगी?" सबने 'हाँ' किया!

स्नेहा बोली, "मुझे पता था कि तुम ज़रूर समझ जाओगी, तुम बहुत समझदार हो। तुम्हें पता है, पहले मैं भी यही सोचती थी, पर जब मेरे माता-पिता मुझे हमेशा के लिए छोड़कर चले गए, तब मुझे समझ आया कि माता-पिता हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हारे साथ भी ऐसा हो। तुम एक बार अपने माता-पिता से बात ज़रूर करना। तुम उनकी बात भी समझना और अपनी भी समझाना।"

श्रुति ने कुछ नहीं कहा, बस सिर हिलाकर चली गई। उसके बाद वे सब कक्षा में गईं। उस दिन पहली बार श्रुति ने कक्षा में पूछे गए प्रश्न का जवाब दिया; पहली बार वो छात्रावास में बहुत खुश थी। वह सब के साथ बात कर रही थी। स्नेहा उसको देखकर बहुत खुश थी।

अब श्रुति खुश रहने लगी; सब चीज़ों में वो आगे रहने लगी। उन पाँचों की दोस्ती बहुत गहरी हो गई थी। वे साथ में खूब मस्ती करतीं। एक दिन अन्या, अनुषा और पिहु हँसते हुए स्नेहा और श्रुति के पास गए।

अन्या बोली, "यार...यह लड़की पिहु बड़ी कमाल है, यह बहुत हँसाती है।"

अनुषा ने कहा, "ज़रा इसका चुटकुला तो सुनना।" अभी भी वह तीनों हँस रहीं थीं।

श्रुति बोली, "हमें भी बता दीजिए जनाब, ज़रा हम भी हँस लें।"

पिहु ने कहा, "अच्छा तो सुनो... रमन कार धो रहा था। तभी एक आंटी पास से गुज़रीं और पूछा – 'क्या कार धो रहे हो?' रमन बोला – 'नहीं, पानी दे रहा हूँ, शायद बड़ी होकर बस बन जाए'।"

यह सुनकर वे पाँचों हँसने लगीं। वे काफ़ी देर तक हँसतीं रहीं। श्रुति की ज़िंदगी बहुत खुशहाल हो गयी थी। वे पाँच साल से इकट्ठे थे और उन्हें ऐसा लगता था कि जैसे बस अभी सिर्फ़ पाँच दिन ही हुए हों। पर अब उनके बिछड़ने का वक़्त आ गया था। परीक्षाएँ समाप्त हो गईं थीं और उन पाँचों के बहुत अच्छे अंक आए थे। लेकिन अब उनके छात्रावास में साथ रहने के दिन खत्म हो गए थे। वे सब बहुत दुखी थीं क्योंकि वे एक-दूसरे से दूर नहीं जाना चाहतीं थीं।

आख़िरी दिन वे सब जब गले मिलीं तो स्नेहा से पूछा, "श्रुति, अब ज़िंदगी अच्छी है या बुरी?" श्रुति ने जवाब दिया, "अच्छी नहीं, बहुत अच्छी है। तुम सब की वजह से मुझे ज़िंदगी का असली मतलब समझ में आया है। माता-पिता से तंग ना होकर उनसे शांति से बात करना, तुम सब ने ही तो सिखाया है। तुम सबको हर एक चीज़ के लिए धन्यवाद।"

यह सुनकर वे सब रोने लगीं। उन्होंने कुछ देर बातें की और फिर सब जैसे-तैसे अपना दिल मज़बूत कर अपने-अपने घर के लिए चल पड़ीं। जब श्रुति अपने घर पहुँची, तब उसने अपने माता-पिता को गले लगाया और उनसे माफ़ी माँगी। वे उसे देखकर खुश थे। श्रुति ने उसने बात की और अपनी भावनाएँ बताईं। काफ़ी देर बातचीत के बाद, अंत में उसके माता-पिता ने उससे अपनी हर एक ग़लती पर माफी माँगी। वह अपने माता-पिता के साथ खुश थी पर शायद उसकी ज़िंदगी उन चारों के बिना अधूरी थी। वह उन्हें बहुत याद करती थी।

कुछ महीनों बाद, उसके घर के दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। श्रुति दरवाज़ा खोलने गयी तो वह हैरान रह गई। उसके सामने उसकी वो चारों दोस्त थीं। वह उन्हें देखकर प्रसन्नता से चिल्ला उठी।

उन पाँचों ने एक दूसरे को गले लगाया। उन्होंने श्रुति को बताया कि वे अब सब उसके घर के पास ही रहतीं हैं। अब वे रोज़ मिलने आएँगी। यह सुनकर श्रुति गद्‌गद् हो गई। अब उसकी अधूरी ज़िंदगी पूरी हो गई थी।

अनुषा ने कहा, "हम अपनी दोस्त को अकेला थोड़े ही ना छोड़ेंगे।"
अन्या ने श्रुति को एक तस्वीर दी जो उसने खुद बनाई थी। उसमें उन पाँचों की तस्वीर थी। श्रुति यह देखकर रोने लगी और बोली, "मैं इसे मरते दम तक अपने साथ रखूँगी। दोस्त हों तो तुम्हारे जैसे वरना ना हों।" उन्होंने उसे चुप करवाया।

पिहु ने माहौल बदलने के लिए कहना शुरू किया करा, "दूर हो जाएँ तो ज़रा इंतज़ार कर लेना, अपने दिलों में इतना तो ऐतबार कर लेना; लौट के आएँगे हम अगर चले जाएँ, आप बस हमसे दोस्ती बरकरार कर लेना।"

"वाह. . . ! वाह. . . ! वाह . . . !" कहते हुए वे आपस में बातचीत करने लगीं।

पर्यटन का अद्भुत अनुभव

अदिति मेश्राम

श्री महर्षि विद्या मंदिर, चंदरपुर, महाराष्ट्र

एक दिन मैं और मेरे दोस्त दिव्या, नेहा, रीमा, अर्जुन ओर राहुल पर्यटन के लिए गडचिरोली जिला में जंगल सफ़ारी के लिए गए। जंगल में हम सभी साथी एक जगह पर तंबू गाड़ कर वहाँ ठहरे। हम सब ने खाना खाया और अंगीठी जलाकर आग सेंकने बैठे। रात को सभी तंबू के अंदर जाकर सो गए।

सुबह उठकर जंगल में घूमने जाना था और साहसिक गतिविधियाँ करनी थी। जंगल में घूमते समय हमें हर जगह भगवान शिव के मंदिर दिखाई पड़े और कुछ जंगली पशु भी दिखाई दिए। जिन्हें देखकर दिव्या और नेहा डर गईं। जंगल में घूमते समय अचानक मुझे उत्तर दिशा की ओर से एक आवाज़ सुनाई दी। मैं उस आवाज़ की ओर चल पड़ी। चलते-चलते मैं अपने दोस्तों से इतनी दूर आ गई कि मुझे रास्ता समझ नहीं आ रहा था और मैं रास्ता भी भूल गई थी। आवाज़ की दिशा में जाते समय मुझे कुछ आदिवासी लोग मिले। मैंने उनसे रास्ता पूछने की कोशिश की तो उन्हें मेरी भाषा समझ नहीं आ रही थी। मैं उत्तर दिशा की ओर आगे चलती गई।

उधर मेरे सभी साथी मुझे ढूँढने लगे और वे डर भी गए। जंगल होने की वजह से मोबाइल में नेटवर्क भी नहीं आ रहा था। उत्तर दिशा की ओर जाते समय मुझे एक गुफा दिखाई दी।उसे देखकर मुझे अलीबाबा चालीस चोर वाली 'खुल जा सिम-सिम' वाली गुफा याद

आ गई। मैंने भी यही सोचा कि सच में 'खुल जा सिम-सिम' बोलने से क्या गुफा खुलेगी, क्योंकि ऐसी गुफाएँ हमने टीवी सीरियल, कहानी या किसी फ़िल्म में देखी थीं। मेरे 'खुल जा सिम-सिम' बोलने से गुफा नहीं खुली, पर उस गुफा के बगल में एक द्वार दिखाई पड़ा। मैंने अंदर जाकर देखा तो वहाँ एक खदान दिखाई पड़ी; वो सूरजगढ़ वाली मैग्नीज़ की खदान थी। मैं वहाँ से निकलकर फिर आगे गई। आवाज़ उसी खदान की थी। चलते-चलते मैं थक गई थी। मुझे भूख भी लगी थी। मैं इधर-उधर खाने के लिए कुछ फल ढूँढ रही थी या कोई घर मिलेगा क्या? थोड़ी दूर पर मुझे शिव मंदिर दिखाई पड़ा। शिव मंदिर के पास जाने पर वह मुझे अति प्राचीन मंदिर लगा। वह भग्न अवस्था में था। थोड़ा टूटा-फूटा लग रहा था। थोड़ा उजड़ा-सा लग रहा था। वहाँ जाने पर मैंने शिव जी के दर्शन किए। वहाँ से नीचे की ओर मुझे रास्ता दिखाई पड़ा।

इधर मेरे दोस्त मुझे ढूँढ-ढूँढ कर परेशान हो गए। उधर मेरी उत्सुकता बढ़ने के कारण मैं नीचे दिखाई देने वाले रास्ते पर अंदर जा रही थी। मुझे बहुत डर लग रहा था कि कहीं यह कोई नक्सलवादियों का अड्डा तो नहीं? फिर यहाँ साँप या कोई प्राणी तो नहीं? मैं हिम्मत करके उस मंदिर के दिखाए रास्ते से अंदर गई। मैं अंदर जाकर आश्चर्यचकित हो गई क्योंकि वह नक्सल का अड्डा नहीं था और वहाँ कोई प्राणी या

साँप भी नहीं था। उस कमरे में सिर्फ़ झाड़ियाँ और बेल फैली हुई थी। डर-डर के अंदर जाने के बाद मैंने वहाँ देखा तो मुझे कुछ लकड़ी के संदूक दिखाई दिए; मुझे लगा

उनमें कहीं गोला-बारूद तो नहीं? एक लकड़ी के संदूक में सिर्फ़ कुंडी लगी थी; उस पर ताला नहीं नज़र आया तो मैंने वह लकड़ी का संदूक खोलकर देखा, तो मैं आश्चर्यचकित रह गई क्योंकि उसमें कुछ प्राचीन चीज़ें नज़र आईं – सोने-चाँदी, हीरे-मोती के गहने, चाँदी और ताँबे के सिक्के। यह सब देखकर मुझे बहुत डर लग रहा था क्योंकि वह मुझे अति प्राचीन खजाना लग रहा था।

मेरी जानकारी के हिसाब से चंद्रपुर जिला और गढ़चिरौली जिले पर वीरशाह का शासन रहा था। उसी ज़माने में ऐसी गुफाएँ और ऐसे खजाने हुआ करते थे। यह खजाना हमारे राजा वीरशाह का ही था, ऐसा मुझे लगा। मैं उस खजाने में से दो-तीन सिक्के लेकर वापस ऊपर आ गई।

बाहर आकर मैं वहाँ बैठकर सोचने लगी कि अब क्या करूँ? मुझे भूख भी लगी थी। इतने में मेरे मित्र वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली (जी पी एस) की सहायता से मुझे ढूँढते हुए वहाँ आ पहुँचे। उन्हें देखकर मैं बहुत खुश हो गई। फिर मैंने उन्हें उस खजाने के

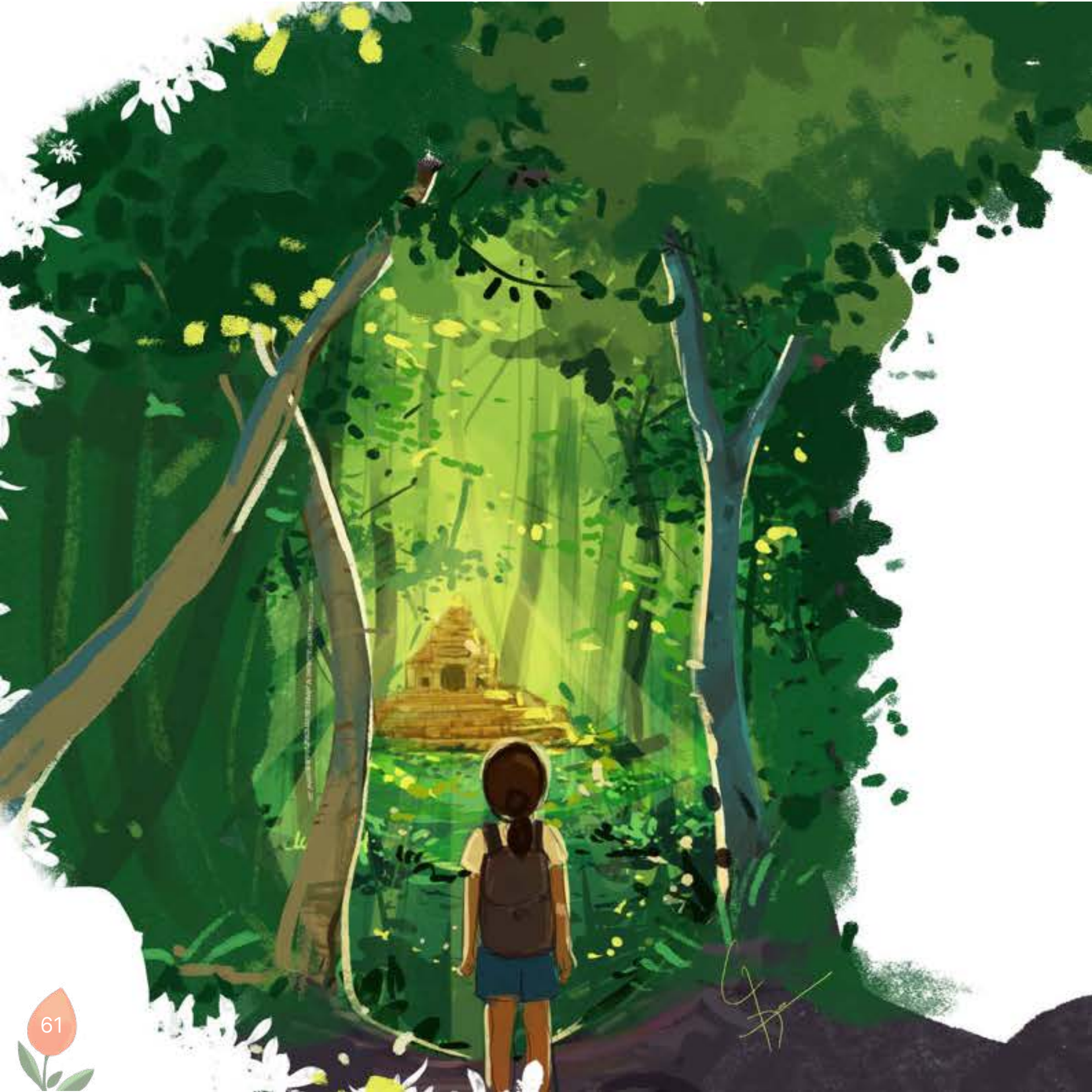

बारे में बताया और मेरे पास जो सिक्के थे, वो भी दिखाए। फिर हम एक साथ ही तहखाने में गए। वहाँ हमने सबने प्राचीन खजाना देखा। उन सिक्कों पर गोंडराजा के चिह्न अंकित थे।

हम चलते-चलते हमारे पर्यटन स्थल से 20 किलोमीटर दूरी पर आ गए थे। उस मंदिर के एक किलोमीटर पर एक गाँव दिखाई पड़ा। हम सब साथी उस गाँव में गए। वहाँ के सरपंच से हमने बात की और उन्हें उस खजाने के बारे में बताया। उन्होंने हमारी बात पर विश्वास किया और गढ़चिरौली जिले के वन परीक्षेत्र अधिकारियों से संपर्क किया और इस बात की जानकारी दी। वन परीक्षेत्र अधिकारी आए और उन्होंने उन सात लकड़ी के सन्दूकों को खोला। उनमें से भारी मात्रा में प्राचीन खजाना प्राप्त हुआ।

यह प्राचीन खजाना देश की धरोहर था इसलिए इस खजाने को पुरातत्व विभाग में जमा कर दिया गया। पुरातत्व विभाग तथा वन परीक्षेत्र अधिकारियों ने हमारी खूब प्रशंसा की और खजाने के बारे में बताने के लिए आभार भी व्यक्त किया। वन परिक्षेत्र अधिकारियों ने हमें हमारे पर्यटन स्थल पर पहुँचाया। मेरे सब मित्र भी बहुत आनंदित हुए। भारत का एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के कारण मैंने मुझे मिले उस प्राचीन खजाने को देश को सुपुर्द कर दिया। उसके बाद बड़ी उमंग के साथ हम सभी साथी अपने-अपने घर लौट आए।

किशनगढ़ का किला

आरुली वाडिया

एपीजे स्कूल, नेरुल, नवी मुंबई, महाराष्ट्र

चाँदनी ने बचपन से ही अपने गाँव में पर्यटकों को देखा था। वह जब भी उन्हें देखती अपनी दादी से सवाल करती, "दादी, ये लोग कौन हैं? हमारे गाँव में बाहर से लोग क्या करने आते हैं?"

दादी हँस के बोलतीं, "यहाँ के गुप्त राज़ जानने आते हैं सब! जब तुम बड़ी हो जाओगी, तुम भी रहस्यों को ढूँढने निकलना और शुरुआत अपने गाँव से ही करना!"

अब चाँदनी ग्यारह साल की हो गई थी। वह एक चंचल किन्तु आज्ञाकारी लड़की थी। उसे उसके जन्मदिन पर पिताजी ने एक नई साईकिल उपहार में दी। वह उसकी सवारी करने के लिए अत्यंत उत्सुक थी।

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। चाँदनी ने सोचा उसे साइकिल चलाने का समय मिल जाएगा। "सारे गाँव का चक्कर लगाऊँगी। क्यों न पर्यटकों का ही पीछा किया जाए? क्या पता कुछ नया देखने मिल जाए? पिताजी तो तीन महीने बाद आएँगे और माँ को घूमने में कोई दिलचस्पी है नहीं। वैसे भी उनकी बचपन की सहेली अपने बच्चों के साथ कुछ दिनों के लिए हमारे यहाँ रहने आ रही हैं। दोनों को बात करने में रुचि ज्यादा होगी, ना कि हम बच्चों को बाहर घुमाने में। उनके आने से पहले मैं खुद ही घूम आऊँगी।"

अगली सुबह चाँदनी साइकिल ले कर निकल पड़ी। माँ ने बाज़ार के कुछ काम भी बता दिए थे। वहीं पर कुछ पर्यटक दिखाई दे गए जो कहीं जा रहे थे। वह उनके पीछे-पीछे चलने लगी। कुछ

ही दूरी पर एक खंडहर था। "सब वहीं जा रहे हैं शायद! इस पुराने खंडहर में देखने जैसा क्या है?" उत्सुकतावश वह उनके पीछे हो ली। खंडहर के भीतर कुछ ख़ास नहीं था परन्तु दीवारों पर सुन्दर कलाकृतियाँ बनी हुई थीं। दीवारों पर उस समय में रहने वाले लोगों की दिनचर्या का चित्रण था। वह ज्यादा देर वहाँ न रुक पाई। उसने सोचा वह बाद में आकर इन्हें देख लेगी और घर वापिस लौट गई।

अगली सुबह चाँदनी फिर उस खंडहर पर पहुँच गई। इस बार वह माँ को बता कर यहाँ आई थी। खंडहर के कुछ अंदर जाने पर एक मुख्य द्वार दिखाई दिया। द्वार पर सुन्दर प्रतिमाएँ उभरी हुई थीं। दीवारों पर बनीं कलाकृतियों में मुख्यतः रानियों के ही चित्र थे। चाँदनी के मन में विचार आया, "शायद किसी रानी का महल होगा!"

चाँदनी द्वार के आगे बढ़ी। अंदर घुसते ही उसने एक बड़े-से प्रांगण में प्रवेश किया। स्तम्भों पर विभिन्न प्रतिमान बने थे। नीचे लाल बलुआ पत्थर का बना फर्श बहुत ठंडा था। बाईं तरफ टूटी-फूटी सीढ़ियाँ थीं जो सुरंग के अंदर चली जा रहीं थीं। यह उसके लिए एक नया अनुभव था।

"यह अवश्य ही अपने समय का एक भव्य महल रहा होगा, पर किस राजा का? दीवारों पर तो इस महल के बारे में कुछ नहीं लिखा है। कहाँ से पता लगेगा इस महल का इतिहास?"

जब चाँदनी घर पहुँची तो दादी ने पूछा, "क्यों, कुछ पता चला उस खंडहर में क्या है?"

"किसका है यह तो नहीं पता लगा लेकिन महल के अंदर बने चित्रों से पता लगता है कि शायद किसी रानी का महल होगा।" चांदनी ने जवाब दिया।
तीन-चार रोज़ तक चाँदनी हर किसी से उस खंडहर की ही बात करती रही। कुछ को इस विषय में कोई रुचि नहीं थी, तो कुछ लोग इधर-उधर की आधी-पूरी बातें बना देते थे। ठीक-ठीक कोई कुछ न बता पाया। माँ की सहेली आ गई थीं, उनके बच्चे चाँदनी के हमउम्र ही थे। यहाँ आने से पहले उन्होंने आस-पास की जगहों की बहुत-सी जानकारी इकट्ठी की हुई थी। बच्चे, माँ से, दादी से, तरह-तरह के प्रश्न पूछ रहे थे, और वे दोनों उनकी जिज्ञासा शांत कर रही थीं। सभी को बातें करने में मज़ा आ रहा था।

चाँदनी ने माँ की सहेली से पूछा, "क्या आप हमारे गाँव के इस खंडहर पड़े महल के बारे में भी कुछ जानती हैं?"

"हाँ बिलकुल! मैंने हाल ही में इस पुराने महल के बारे में अख़बार में एक लेख पढ़ा था। कहो तो तुम लोगों को इस महल की कहानी बताऊँ?"

दादी बोलीं, "तुमने तो चाँदनी के मन की बात पढ़ ली।" माँ मुस्कुरा दी। चाँदनी की आँखों में चमक आ गई।

उन्होंने बताना शुरू किया, "किशनगढ़ के राजा को पुत्ररत्न की प्राप्ति नहीं हुई थी। पुत्र न होने की स्थिति में उनका राजपाट उनकी मृत्यु के बाद किसी और के हाथों में चला जाता। उनकी

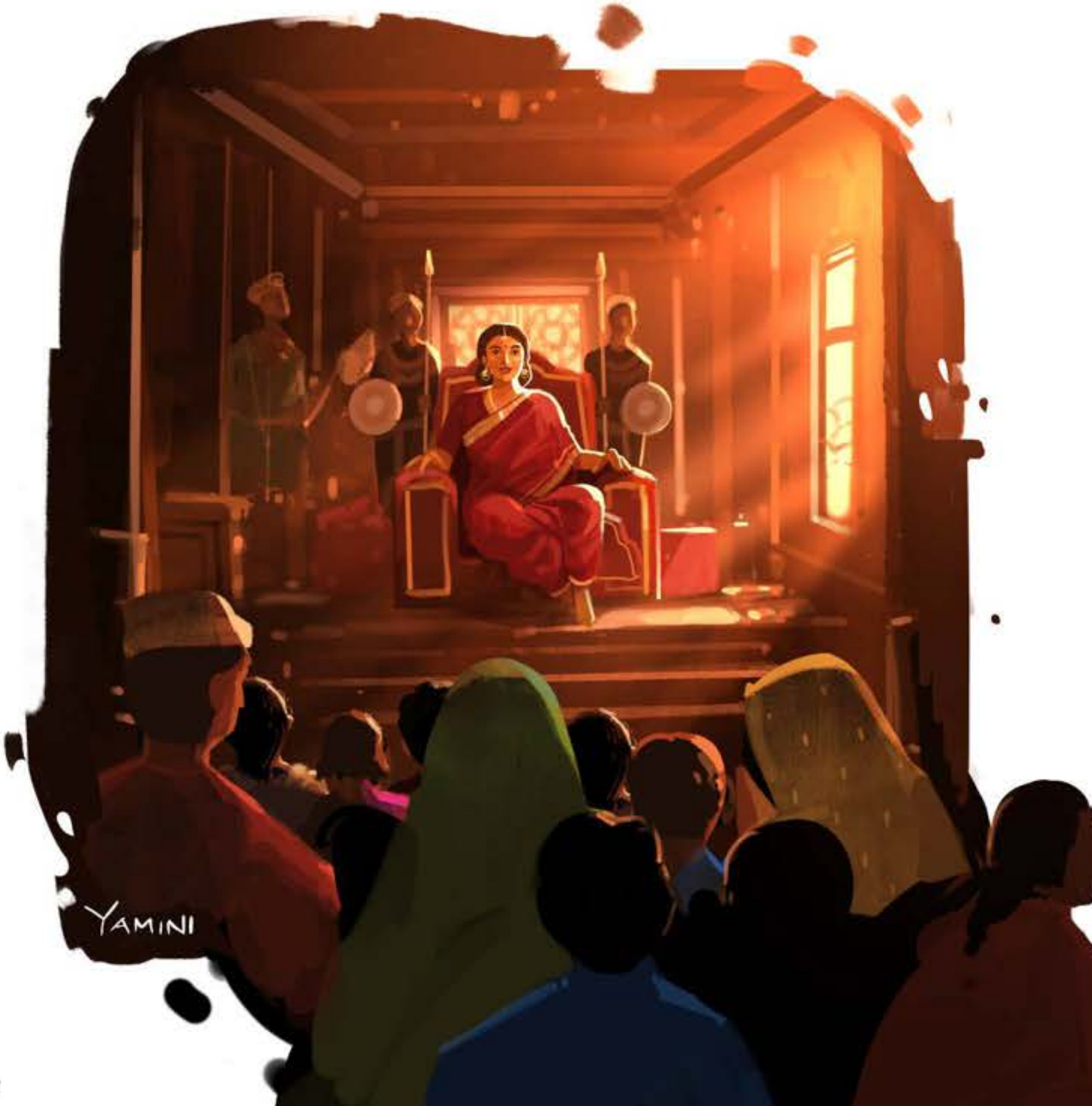
YAMINI

पहले से ही तीन पुत्रियाँ थी। जब उनकी चौथी संतान भी पुत्री हुई तो उन्होंने सबसे यह बात छुपा कर रखी और सबको यही सूचित किया गया कि राजा को पुत्र हुआ है। राजकुमारी को उनके विश्वासपात्र राज्यपाल ने पाला और वे सब गुण सिखाए जो एक राजकुमार में होने चाहिए। राजकुमार की सुरक्षा का हवाला दे कर उसको सदा अपने रिश्तेदारों से दूर एक गुप्त स्थान पर ही रखा गया। राजा की मृत्यु के उपरान्त राजकुमार के वेश में राजकुमारी ने अपनी विश्वासपात्र महिलाओं का एक मंत्रिमंडल तैयार किया और राज्य को बहुत अच्छे ढंग से चलाया।"

"यह अपने आप में एक उदाहरण था कि राज्य चलाने की योग्यता स्त्रियों में भी थी, परन्तु राज्य का उत्तराधिकारी सदा पुरुषों को ही चुना जाता रहा।"

"दुर्भाग्यवश वे ज़्यादा वर्षों तक राज नहीं कर पाईं। किसी बीमारी के चलते वह कम उम्र में ही चल बसी और समय गुज़रने के साथ उनका यह महल खण्डहर में बदल गया। उनका यह राज़ सालों तक राज़ ही रहा। काफ़ी सालों बाद इस बात की पुष्टि राजघराने के परिवार ने की। उनके पास लिखित तथ्य थे जो अब जा कर सबके सामने उजागर किए गए है।"

तीनों बच्चे बड़े ध्यान से उनकी कही हुई बातें सुन रहे थे। दादी और माँ भी पास बैठीं सब सुन रही थीं।
"माँ, तो क्या फिर कभी इतिहास में कोई ऐसी राजकुमारी या रानी नहीं हुई जिसको उसके पिता ने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया हो?" उनके पुत्र ने प्रश्न किया।

"सीधे शब्दों में कहा जाए तो हाँ, पुत्रियों को राज्य का उत्तराधिकारी कभी नहीं चुना गया। स्त्रियों ने नेतृत्व तो किया, पर तभी, जब कोई विपदा आई। भारत के इतिहास में ऐसी बहुत-सी राजपूत और मुग़ल रानियों के बारे में उल्लेख है जो राजनीति और प्रशासन की बहुत गहरी समझ रखती थीं तथा समय-समय पर राजा उनसे सलाह-मशवरा किया करते थे ताकि राज्य की उन्नति हो और राजा का मान बढ़े। यह बात समस्त मंत्रियों को पता भी रहती थी, किन्तु कभी किसी रानी को उसकी इस योग्यता का सीधा श्रेय नहीं दिया गया। न ही कभी रानियों ने

इस ओर अपना ध्यान दिया कि उनके बारे में भी कुछ ऐसा लिखा जाए जिससे उनका यशगान हो।"

"उस समय के लेखक भी राजा के संरक्षण में रहते थे और उन्हीं का गुणगान करते थे। उस समय के इतिहासकारों ने रानियों का, अधिकतर किसी राजा की पत्नी या माँ के रूप में ही वर्णन किया, कभी उनकी मुख्य सलाहकार के रूप में नहीं। नूरजहाँ, चाँद बीबी, जहाँआरा, वेलु नाचियार आदि ऐसी बहुत-सी रानियाँ थी, जो योग्यता में किसी राजा से कम नहीं थीं पर उनके बारे में नहीं लिखा गया है।"

"तुम्हारा किशनगढ़ का महल भी ऐसी ही एक स्त्री की कहानी बताता है, जो यदि लंबे समय तक जीवित रहती और उसी कुशलता से अपना राज्य संभाल पाती, तो इतिहास की किताबों में उनके समान विभिन्न रानियों का वर्णन मिलता और संभवतः समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अलग होती।"

"इतिहासकारों द्वारा बताई गई इन कहानियों से उन सभी स्त्रियों को बल मिलता है, जो समाज में सिर्फ माँ या पत्नी का स्थान प्राप्त कर एक सीमित जीवन नहीं जीना चाहतीं, अपितु पुरुषों के साथ मिलकर समाज और विश्व के कल्याण में भी अपना पूरा योगदान देना चाहती हैं।"

"चांदनी, तुम कल हम सब को महल दिखाने ले चलना।"

दादी माँ ने सुझाव दिया, "चांदनी, तुम इस खंडहर की गाइड क्यों नहीं बन जाती? अपने गाँव के लोगों को और बाहर से आने वाले लोगों को इस महल से जुड़ी कहानी सुनाओ! इस तरह तुम आस पास रहने वाले लोगों को सही तथ्यों की जानकारी देकर अपनी मातृभूमि से जुड़ने का मार्ग प्रशस्त करोगी।"

उनकी बातें सुनकर चाँदनी में जोश भर गया। वह बोली, "इस बार जब पिताजी घर आएँगे तो मेरे द्वारा किए गए इस कार्य की अत्यंत सराहना करेंगे। उन्हें मुझ पर कितना गर्व होगा! फिर हम भी पिताजी के साथ किसी ऐसी जगह घूमने जाएँगे जहाँ के किस्से-कहानी प्रेरणा से भरपूर हों।"

चाँदनी मन ही मन बहुत-सी बातें सोच कर खुश हो रही थी। माँ और दादी भी उसके लिए खुश थीं।

YAMINI

मैं और मेरा ‘ गिलहरेश ’

अनिकेत सिंह

आर्मी पब्लिक स्कूल, फैजाबाद कैंट, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

फाल्गुन मास की एक नई सुबह; एक ऐसी भोर जिसमें कुछ अलग, कुछ अनोखा-सा सम्मिलित हो। हमेशा की तरह उगते सूर्य की वासंती किरणों की सहायता से मैंने अपनी नींद से बोझल आँखें खोलीं। उठते संग ही मैंने अपने दैनिक क्रियाकलापों की अदृश्य सूची को जाँचा और फिर उसी नियमित दिनचर्या का पालन करना आरंभ किया। अपने निजी कार्य करते हुए मेरे मन एवं शरीर में आलस्य और प्रमाद का अहसास था जो कि अमूमन लंबी नींद के उपरांत हो ही जाता है।

काम करते-करते मैं मौसम में होने वाले परिवर्तनों के बारे में सोच-विचार करने लगा। यह कोई नई बात नहीं थी कि मैं कोई कार्य करते समय उस पर पूर्णतया केन्द्रित न होकर किसी अन्य अनावश्यक विषय का विवेचन कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि यह कोई अच्छी बात नहीं है, परंतु निरंतर कुछ न कुछ सोचा करना मेरा व्यक्तिगत स्वभाव है और शायद आप में से कुछ का भी हो। मेरे मस्तिष्क में भीषण जाड़े का मनोरम वसंत में परिवर्तित हो जाने का रहस्य हिलोरें ले रहा था।

इसी बीच दरवाज़े की घंटी की आवाज़ से मेरी कल्पना बाधित हुई जिससे मैं सतर्क हो गया और सीढ़ियों से नीचे उतरा और दरवाज़े से झाँक कर बाहर देखा। मुझे पास के डाकघर का एक डाकिया मिला जो एक पत्र देने आया था। मैंने उनसे पत्र लिया और सभी औपचारिकताओं को पूरा करने में उनकी मदद की। मैं चिट्ठी लेकर जल्दी से ऊपर की ओर भागा। जिज्ञासा मेरे मन पर हावी हो रही थी। इसलिए मैं बैठ गया और धीरे-धीरे पत्र को पढ़ने लगा। मुझे पता चला कि यह मेरे पिता जी का एक पत्र था जो कुछ व्यावसायिक कार्यों के लिए कई हफ्तों से शहर से बाहर

थे। उन्होंने पत्र में सूचित किया था कि वह कल तक घर वापस आ जाएँगे और वह भी मेरे लिए एक विशेष उपहार के साथ! जैसे ही मैंने पत्र पढ़ना समाप्त किया, मैं खुशी से नीचे भागा और सब को वह सब कुछ बताया जो मुझे अभी-अभी पता चला था। इसके बाद मैंने अपने सभी लंबित कार्यों को पूरा किया और अपने पिता के आने का इंतज़ार करने लगा। वह एक दिन पूरे एक महीने जैसा लग रहा था।

"इस प्यारे से जीव का क्या नाम रखूँ?"

मेरा इंतज़ार दूसरे दिन खत्म हुआ जब मेरे पिता जी आए। मैंने उनका स्वागत किया और तब मुझे वह विशेष उपहार मिला जो मेरे पिता जी मेरे लिए लाए थे। यह एक छोटे शरीर का एक सुंदर नर-गिलहरी था जिसके पास चमकदार मोती-सी आँखों की एक जबरदस्त जोड़ी थी। मैंने हमेशा एक पालतू जानवर रखने का सपना देखा था और अब मेरे पास एक अद्भुत पालतू जानवर था। मैंने इसे पूरी सावधानी से अपने हाथों में लिया। ऐसा करते समय मेरा पूरा शरीर, खासकर हाथ तीव्र गति से काँप रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उत्तेजना केवल मेरे लिए ही सीमित नहीं है बल्कि यह पूरी दुनिया में व्याप्त है। शुरू में वह मेरे साथ सहज महसूस नहीं करता था, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया हम दोनों के विचार भी एक जैसे हो गए। जैसे ही उसने मुझसे दोस्ती की, मुझे एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा, और वह थी उसे एक सही नाम देना। इस फ़ैसले का बहुत महत्व था, क्योंकि वह मेरा पहला और लंबे समय से प्रतीक्षित पालतू जानवर था। मैं नहीं चाहता था कि कोई इस फ़ैसले को हल्के में ले।

इस महत्वपूर्ण विषय पर काफ़ी समय तक शोध करने और विचार करने के बाद, मैं उसे 'गिलहरेश' बुलाने के निष्कर्ष पर पहुँचा। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो नई चीज़ों की ओर आकर्षित रहता है। धीरे-धीरे मैं अपने पालतू जानवर के साथ अधिक समय बिताने लगा। मैं देर तक अपनी बालकनी में बैठकर गिलहरेश को उसकी मज़ेदार गतिविधियाँ करते देखता रहता। वह दिन भर एक कटोरी मूँगफली खाता रहता था जो उसे रोज़ सुबह दी जाती थी।

गिलहरेश भी उन्हीं आदतों के साथ जन्मा था जो दूसरी गिलहरियाँ धारण करती हैं। उसके पास जंगली-गिलहरी की आदतों की एक विस्तृत श्रृंखला थी, लेकिन यह खुशी की बात नहीं थी क्योंकि वह कई बार अपने जंगली स्वभाव में चला जाता था और ऐसे काम करता था जो कि किसी आम घर में शांति से रहने के लिए उचित नहीं थे। उसने घर की लंबवत दीवारों को एक पेड़ की छाल के रूप में माना और उस पर चढ़ने की कोशिश की। लेकिन वह कई बार दीवार को खुरच कर वॉलपेपर को फाड़ देता था। एक दिन मैंने उसे एक लटकते गमले से दूसरे गमले में कूदते देखा। समस्या यह थी कि गमले बहुत मज़बूती से लटके हुए नहीं थे और उनके टूटने की संभावना थी। और क्या? एक गमला गिलहरेश के साथ फर्श पर गिर गया और उसने एक नए गमले के लिए हमारे खर्च के साथ-साथ खुद को भी घायल कर लिया। ऐसे उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए, गिलहरेश को कुछ अच्छी आदतें सिखाना आवश्यक हो गया जैसे कि घर में किसी को कैसे रहना चाहिए, और हमने वही किया।

ऐसे ही एक सामान्य दिन में मेरे पिता जी ने मुझे बुलाया लेकिन मैंने कोई जवाब नहीं दिया

क्योंकि मैं अपने छोटे साथी के साथ खेलने में व्यस्त था और साथ ही साथ अपने कुछ महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर रहा था। उन्होंने एक बार फिर मुझे बुलाया; इस बार उनकी आवाज़ तेज़ और ज़ोरदार थी। मैं डर गया और नीचे अपने पिता जी के कमरे की ओर भागा। मैंने चुपचाप कमरे में झाँका और देखा कि मेरे पिता जी सोफ़े पर बैठे हैं। वह नाराज़ नहीं थे बल्कि अच्छी मनोदशा में थे। मैंने राहत की एक गहरी साँस ली। उन्होंने मुझे बताया कि हम आज ही अपने गाँव जाएँगे। यह सुनकर मैं अत्यंत खुश हो गया और हमारे जाने की तैयारी करने लगा। मैंने गिलहरेश को अपने साथ ले जाने का एक महान निर्णय लिया और वह भी खुश था। गाँव पहुँचने पर हम दोनों खूब खेले क्योंकि हम दोनों को प्रकृति का आनंद लेना पसंद था; और मुझे लगता है कि पर्यावरण की हरियाली का अनुभव करने के लिए गाँव से बेहतर कोई जगह नहीं है।

YAMINI

उसके साथ खेलते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही थी। लेकिन वह खुशी बहुत देर तक नहीं टिकी। आनंद के उस क्षण में अचानक मुझे किसी प्रकार की आवाज़ सुनाई दी और साथ ही मैंने देखा कि एक हरी झाड़ी में कुछ हलचल हो रही है। हालाँकि, मैंने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया और खेलना जारी रखा; लेकिन कुछ देर बाद वही हलचल फिर से हुई। यह कुछ अजीब था और मुझे इसकी जाँच करनी पड़ी। इसलिए मैं झाड़ी की ओर आगे बढ़ा, लेकिन जैसे ही मैं वहाँ पहुँचने वाला था, कि तभी घनी झाड़ी से एक विशाल गहरे हरे रंग का और बेहद जहरीला साँप निकला। यह देखकर मैं रुका और पीछे मुड़कर जितनी तेज़ गति से भाग सकता था उतनी तेज़ गति से भागा।

ऐसी अराजक स्थिति में भी मैं उस नन्हें जीव को नहीं भूला जिसे मैं बहुत प्यार करता था। मैं उसे बचाने के लिए वापस भागा लेकिन मेरी किस्मत खराब थी। मेरा पैर एक छोटे से गड्ढे में फंस गया और मैं ज़मीन पर गिर गया और मेरा सिर एक बड़ी-सी सख्त चट्टान से टकरा गया, जिससे मैं थोड़ी देर के लिए बेहोश हो गया।

मेरा छोटा साथी इस कार्य-श्रृंख्ला से अनभिज्ञ था। उसकी नादानी, साँप के वहाँ पहुँचने और उसे कसकर लपेटने के लिए काफ़ी थी। उसने साँप के चंगुल से छूटने की पूरी कोशिश की और शुरू में वह ऐसा करने में सफल भी रहा, जिस वजह से मेरे हृदय में उसके बचने की उम्मीद जग गई। लेकिन पहले से ही घायल होने के कारण वह तेज़ी से भाग नहीं सका और वह फिर साँप की गिरफ्त में आ गया। इस बार उसने साँप के शरीर पर अपने छोटे-छोटे नाखून से वार

किया, लेकिन इस तरह के छोटे हमलों से साँप पर कोई असर नहीं हुआ।

मैंने उसे बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन सिर पर लगी चोट के कारण मैं यह करने में असमर्थ हो चुका था और इस भीषण रण का अवांछित दर्शक बन चुका था। एकतरफ़ा संघर्ष धीरे-धीरे प्रतिस्पर्धा में बदल ही रहा था कि अचानक वह विषैला फन नीचे आया और गिलहरेश की नाज़ुक त्वचा में आ धँसा। उस भुजंग ने वही क्रिया कई बार दोहराई, जिससे नन्हा जीव बेहोश हो गया। जो भी कारण रहा हो परंतु साँप ने उसे वहीं छोड़ दिया और रेंगते हुए मेरे करीब से निकल गया।

एक क्षण भी न बीता होगा कि मैं वहाँ गया, गिलहरेश को अपने हाथों में लिया और देखा कि उसका शरीर नीला पड़ गया है। मैं तुरंत समझ गया कि उस विषधर ने अपना विष उसके शरीर में निश्चित ही डाल दिया है।

समय निकलता देख मैं उसे पशु चिकित्सक के पास इस उम्मीद से ले गया कि वह जल्द ही ठीक हो जाएगा। पर यह क्या! डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मैं सचमुच चौंक गया था और डॉक्टर को मनाने लगा कि गिलहरेश जीवित ही होगा, लेकिन वास्तविकता को कौन नकार सकता है। मुझे अपने प्रिय साथी के अविश्वसनीय मृत शरीर को लेकर नम नेत्रों के साथ घर वापस लौटना ही पड़ा।

YAMINI

मेरे परिवार के किसी भी सदस्य को विश्वास नहीं हो रहा था कि हमारा अपना गिलहरेश अब हमारे बीच नहीं रहा।

मैंने अपने इकलौते और सबसे पहले पालतू दोस्त को रीति-रिवाज़ों से शोभित विदाई दी। जलते संग ही उसकी सामने दिख रही मूक छवि भी धूमिल हो गई। हाय! वह कोमल, चहकता लघुगात अब राख का ढेर बनकर रह गया था। हालाँकि वह बाहरी रूप से मर गया हो, परन्तु आंतरिक रूप से उसकी छवि सदैव जीवंत रहेगी। मेरा विश्वास है कि मेरा दिवंगत मित्र किसी न किसी रूप में पुनर्जन्म अवश्य लेगा। कुछ भी हो पर वह ज़रूर आएगा। सखा, तुम्हारा मित्र अनिकेत तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा।

इंतज़ार जो कभी ख़त्म न हुआ...

अर्चना कृष्णकुमार

आईईएस पब्लिक स्कूल, त्रिशूर, केरल

यह कहानी बहुत पुरानी है। घटना उस समय की है जब भारत पर अंग्रेज़ों का राज था। कहानी कोई महान व्यक्ति के बारे में नहीं बल्कि उस वीर की है जो एक सच्चा देशभक्त था। दिल से, मन से, रंग-रूप से, भाषा से और वह एक सच्चा भारतवासी था। अपनी मातृभूमि को अंग्रेज़ों के शासन से आज़ादी दिलाने के लिए लड़नेवाले उन वीर सैनिकों में से एक था - हमारा रामवीर।

रामवीर की एक बेटी थी और उसका नाम था मीनू। यह कहानी उस पिता और बेटी की है। रामवीर अपने देश के लिए लड़ने जा रहा था और मीनू इससे बहुत दुखी थी। वह अपने पापा से याचना कर रही थी, "पापा... मीनू के प्यारे पापा... आप मत जाओ। आप बहुत दूर जा रहे हैं। आप मीनू को नहीं देख पाएँगे। पापा सुनो ना, मत जाओ।"

पर पापा अपने फैसले से पीछे हटनेवाले नहीं थे, वह लड़ने को पूरी तरह तैयार थे। उन्होंने मीनू को समझाने की बहुत कोशिश की। उन्होंने कहा, "अरे! बेटा मीनू! क्या तुम हमारे देश का स्वतंत्रता दिवस मनाना चाहती हो?"

मीनू ने झट से जवाब दिया, "हाँ, बिल्कुल। यह मेरा सबसे बड़ा सपना है।"

"तुम स्वतंत्रता दिवस मनाना चाहती हो, तो बेटा तुम्हारा सपना पापा सच बनाएँगे। हमारे देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए ही पापा जा रहे हैं। जब पापा वापस आएँगे, तब हम साथ में स्वतंत्रता दिवस मनाएँगे, पूरा गाँव तिरंगों से सजाएँगे।"

रामवीर की इन बातों से मीनू समझ गई कि उसके पापा को जाना ही होगा। रामवीर की बेटी उसके जैसे ही देशभक्त थी। उसने अपने पापा से कहा, "पापा, आप जल्दी उन गोरे सिपाहियों को भारत से भगा दो और मीनू के पास वापस आओ।"

रामवीर यात्रा के लिए कुछ कपड़े, पानी और खाना लेकर निकल पड़ा। वह गाँव के कुछ साथियों के साथ जा रहा था। उसके कानों में मीनू की आवाज़ गूँज रही थी, "पापा, जल्दी आओ", मीनू चिल्ला रही थी, "पापा मैं इंतज़ार करूँगी।"

पापा लड़ने चले गए और अब मीनू घर में अकेली थी। बहुत याद आती थी उसको अपने पापा की। कई दिन और कई रातें बीत गईं। पापा से दूर हुए अब लगभग एक महीना हो गया था। मीनू और रामवीर दोनों दुखी थे। देश के सिपाहियों के परिवारों को मदद करने के लिए राजू चाचा गाँव चले आए। रामवीर के घर जाकर उन्होंने रामवीर की हालत की जानकारी दी। मीनू अपने पापा के नाम को सुनते ही राजू चाचा

के पास आई और उनसे पूछने लगी, "चाचा... चाचा... मेरे पापा कहाँ हैं? वे कैसे हैं? क्या उनको मीनू की याद आ रही हैं?"

"बेटा आराम से। थोड़ा धीरे से पूछो ना! आपके पापा एकदम ठीक हैं। आपको अपने पापा से कुछ बोलना है तो एक चिट्ठी लिखो। मैं वह रामवीर को दे दूँगा," राजू चाचा ने थोड़ी हैरानी से कहा। मीनू ने झट से एक पुराना-सा कागज़ लिया और लिखना शुरू किया। कुछ देर सोचा फिर लिखा, फिर सोचा। ऐसे एक लंबी चिट्ठी पूरी हो गई। उसके बाद वह अपनी चिट्ठी ज़ोर से पढ़ने लगी।

"प्यारे पापा, आप कैसे हैं? आप कहाँ हैं? आप कब वापस आएँगे? माँ और मीनू यहाँ ठीक हैं। आपको पता है न कि आपको लड़ने के लिए गए अब लगभग एक महीना पूरा हो गया है। इस दौरान बहुत सारी बातें हुई हैं। मीनू अपनी कक्षा में प्रथम आई है। लक्ष्मी मामी आई थीं, मीनू के लिए बहुत सारे कपड़े लाईं थीं। ऐसे-ऐसे उसने गाँव की सारी खबर पापा को चिट्ठी में लिख डाली। इसके साथ ही मन ही मन उसने अपने पापा के पीठ ठोकते हुए लिखा, "पापा हिम्मत मत छोड़ना। आप वीर हैं, आप जाँबाज़ हैं, आपको देखते ही अंग्रेज़ भाग जाएँगे। मीनू आपका इंतज़ार कर रही है। जल्दी लौट आओ।"

मीनू ने चिट्ठी चाचा के हाथों में रखकर आदेश दिया, "चाचा यह चिट्ठी ज़रूर से पापा को दे देना और अगली बार पापा की चिट्ठी के साथ वापस आना।" राजू चाचा चिट्ठी और गाँव की खबर लेकर चले गए। मीनू खुशी से खेलने गई और साथ में गाती रही, "पापा जल्दी आएँगे, मीनू के साथ खेलेंगे, स्वतंत्रता दिवस हम साथ मनाएँगे।"

दूर, गाँव से बहुत दूर, रामवीर गोरे सिपाहियों से लड़ रहा है। अंग्रेज़ों के पास बंदूक और गोलियाँ थीं तो भारत के वीरों के पास तलवार और अन्य हथियार थे। युद्ध बहुत कठिन था। सैकड़ों आदमी खून से नहाए लड़ रहे थे। रामवीर पूरे जोश से लड़ रहा था पर उसका हाल बेहाल है। उसे दो गोलियाँ लगीं। उसका शरीर खून से लाल, और आँखों में गुस्सा था।

रामवीर आगे बढ़ रहा था। उसने चालीस - पचास अंग्रेज़ों को मार डाला, और अपने साथियों को बचा लिया। पर इस परिश्रम के बीच अंग्रेज़ों ने फिर से गोली चला दी। भारत माँ का वीर पुत्र अपनी मातृभूमि पर गिर पड़ा। उसका लाल शरीर निष्प्राण हो गया था। उसने देश के लिए अपना जीवन त्याग दिया था।

इन सब बातों से अनजान, वहाँ मीनू, अपने पापा के इंतज़ार कर रही थी। एक लंबा इंतज़ार जो कभी खत्म नहीं होगा।

*****दस साल बाद*****

दस साल बीत चुके थे। मीनू के मन में अब भी एक उम्मीद थी कि उसके पापा अब भी, कम से कम ज़िंदा हों। समय बीतने के साथ उसे समझ आ चुका था कि उसका इंतज़ार कभी खत्म नहीं होने वाला-पापा अब कहीं दूर पहुँच चुके हैं; बहुत दूर जहाँ मीनू पहुँच नहीं पाएगी। पर उसे अपने पापा के लौटने की आशा में जीना पसंद था।

मीनू अब छोटी नहीं रह गई थी; वह अपने देश की एक सयानी होनहार महिला बन चुकी थी। देश के लिए आवाज़ उठाने वाली, देश के लिए लड़ने वाली स्त्रियों में से एक थी मीनू। उसने महिलाओं को रैलियों, हड़तालों और अन्य आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। एक दिन एक ऐसे ही आंदोलन में भाग लेने के लिए उसे गाँव से दूर जाना पड़ा; नया शहर, नए रास्ते, नए लोग पर उनके बीच एक पुराना चेहरा - राजू चाचा!

मीनू को देखते ही राजू चाचा उसके पास आए और बोले, "बेटी बहुत साल बीत गए, अब तो सयानी हो गई है हमारी मीनू। काश! अब यह देखने के लिए रामवीर होता।"

कुछ देर मीनू अचल रही, फिर उसने पूछा, "क्या पापा ने मेरी चिट्ठी पढ़ी थी?"

राजू चाचा ने जवाब दिया, "मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारी चिट्ठी उसे नहीं दे पाया।" फिर राजू चाचा ने उस युद्ध के बारे में मीनू को जानकारी दी। मीनू की आँखें चमक रही थीं। अब मीनू भी उसी रास्ते पर चल रही थी जिस रास्ते पर पापा एक दिन चल रहे थे - देश की स्वतंत्रता के रास्ते पर। उसे महसूस हुआ कि देश के ऐसे अनजान वीरों के बारे में लोगों को पता होना चाहिए। उसने अपने गाँव से देश के लिए लड़ने निकले और देश के लिए जान देने वाले उन अनजान सैनिकों के लिए उन वीरों के लिए, एक पुस्तक लिखी और गाँव के सभी घरों में बाँटी। रामवीर के जैसे ही बहुत सारे भारतीय सैनिकों ने अपनी जान की बाज़ी लगाई थी, पर अब उनका नामोनिशान नहीं बचा था। स्वतंत्रता दिवस पर जब भी हम महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं को याद करते हैं, तब ऐसे वीरों को भी याद करना चाहिए क्योंकि उनके त्याग और परिश्रम के बिना हमें यह स्वतंत्रता नहीं मिली होती।

******"जय हिंद"******

शिक्षा :- सैनिकों के प्रति आभारी रहें और उनके बलिदान के लिए उनका सम्मान करें।

शिक्षा का महत्व
प्राची मल्होत्रा
न्यू एरा पब्लिक स्कूल, सेक्टर-24, द्वारका, नई दिल्ली

काफ़ी समय पहले एक राजा जंगल में शिकार करने गया था। बरसात के मौसम में यह अंदाजा लगाना काफ़ी मुश्किल होता है कि कब अचानक बारिश होने लग जाए, और हुआ भी यही, अचानक आकाश में बादल छा गए और तेज़ बारिश होने लगी। सूरज भी डूबने लगा और धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा। अंधेरे में राजा अपने महल का रास्ता भूल गया और सिपाहियों से अलग हो गया। भूख प्यास और थकावट से राजा काफ़ी परेशान हो रहा था। कुछ देर बाद राजा को सामने तीन बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए। तीनों बच्चे काफ़ी अच्छे दोस्त लग रहे थे। उन्हें देखकर राजा ने उन्हें अपने पास बुलाया, "सुनो बच्चों, ज़रा यहाँ तो आओ।" यह सुनकर बच्चे जब वहाँ पहुँचे तो राजा ने उनसे पूछा, "क्या तुम कहीं से थोड़ा भोजन और जल ला सकते हो? मैं बहुत भूखा हूँ और प्यास भी लग रही है।" इस पर बच्चों ने कहा, "जी, ज़रूर! हम अभी घर जाकर आपके लिए कुछ ले आते हैं।"

तीनों बच्चे गाँव की ओर भागे और तुरंत भोजन और जल लेकर आ गए। राजा बच्चों के उत्साह और प्रेम को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने बच्चों से कहा, "प्यारे बच्चों तुम जीवन में क्या करना चाहते हो? मैं तुम सब की मदद करना चाहता हूँ।"

यह बात सुनकर बच्चे कुछ देर तक सोचते रहे फिर उनमें से एक बच्चे ने कहा, "मुझे धन

चाहिए। मैंने कभी दो समय की रोटी नहीं खाई, कभी अच्छे कपड़े नहीं पहने। इसलिए मुझे केवल धन चाहिए ताकि मैं दो समय खाना खा सकूँ और अच्छे कपड़े पहन सकूँ।"

इस पर राजा मुस्कुराते हुए बोला, "ठीक है। मैं तुम्हें इतना धन दूँगा कि तुम जीवनभर खुशी से रहोगे।" यह सुनते ही बच्चे की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, अब दूसरे बच्चे की बारी थी तो राजा ने उससे भी पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए?" तो बच्चे ने जवाब दिया, "क्या आप मुझे एक बड़ा सा बंगला और घोड़ा गाड़ी देंगे?" इस पर राजा ने कहा, "ज़रूर, मैं तुम्हें एक आलीशान बंगला और घोड़ा गाड़ी दूँगा।"

अब तीसरे बच्चे की बारी थी तो उसने कहा, "मुझे ना धन चाहिए ना ही बंगला या गाड़ी चाहिए, मुझे तो आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए जिससे मैं पढ़-लिखकर विद्वान बन सकूँ और शिक्षा समाप्त होने पर अपने देश की सेवा कर सकूँ।"

तीसरे बच्चे की इच्छा सुनकर राजा उससे बहुत प्रभावित हुआ। राजा ने उस बच्चे के लिए उत्तम शिक्षा का प्रबंध किया। वह बच्चा बहुत मेहनती था, इसलिए दिन-रात एक कर के उसने पढ़ाई की और बहुत बड़ा विद्वान बन गया। समय आने पर राजा ने उसे अपने राज्य में मंत्री पद पर नियुक्त कर दिया।

एक दिन राजा को अचानक वर्षों पहले घटी उस घटना की याद आ गई। उन्होंने मंत्री से कहा, "कई सालों पहले तुम्हारे साथ जो दो बच्चे थे अब उनका क्या हाल-चाल है? मैं चाहता हूँ कि मैं फिर एक बार तुम तीनों से मिलूँ, इसलिए कल तुम अपने दोनों मित्रों को भोजन पर आमंत्रित कर लो।"

मंत्री ने अपने दोनों मित्रों को संदेश भिजवा दिया। अगले दिन सभी एक साथ राजा के सामने उपस्थित हुए।

"आज फिर तुम तीनों को एक साथ देखकर मैं बहुत खुश हूँ। इनके बारे में तो मैं जानता हूँ पर तुम दोनों अपने बारे में बताओ," राजा ने मंत्री के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

जिस बच्चे ने धन माँगा था वह बहुत दुखी होते हुए बोला, "राजा साहब मैंने उस दिन आपसे धन माँगकर बहुत बड़ी गलती की। इतना सारा धन पाकर मैं आलसी बन गया और बहुत सारा धन बेकार चीज़ों में खर्च कर डाला। मेरा बहुत सा धन चोरी भी हो गया और कुछ वर्षों में मैं वापस उसी स्थिति में पहुँच गया जिसमें आपने मुझे देखा था।"

अब बंगला गाड़ी माँगने वाले उस व्यक्ति की बारी आई। वो अपना रोना रोने लग गया, "महाराज मैं अपने बंगले में रह रहा था, पर वर्षों पहले आई बाढ़ में मेरा सब कुछ बर्बाद हो गया और मैं भी अपने पहले जैसी स्थिति में पहुँच गया हूँ।"

उनकी बातें सुनने के बाद राजा बोला, "इस बात को अच्छी तरह गाँठ बाँध लो, धन-संपदा सदा हमारे पास नहीं रहते, परंतु ज्ञान जीवनभर मनुष्य के काम आता है और उसे कोई चुरा भी नहीं सकता। शिक्षा ही मानव को विद्वान व बड़ा आदमी बनाती है, इसलिए सबसे बड़ा धन ज्ञान और विद्या है। पहले इसे हासिल करो, धन बाद में स्वत: ही आपके पास आ जाएगा।"

संदेश :- शिक्षा एक ऐसा धन है जो ना ही कोई चोरी कर सकता है और ना ही उजाड़ सकता है। यदि हम शिक्षा की माँग करें तो हमें धन अपने आप ही मिल जाएगा। परंतु यदि हम धन की माँग करें तो हमें शिक्षा नहीं मिल सकती। धन आने से इंसान अपने आप को धनवान समझने लगता है जिसकी वजह से आलसी बन जाता है और उसका धन उसके पास ज़्यादा समय तक नहीं टिक पाता। परंतु विद्या सदैव जीवनभर साथ रहती है। विद्या ही जीवन का मूल स्त्रोत है। विद्या बिना कुछ नहीं!

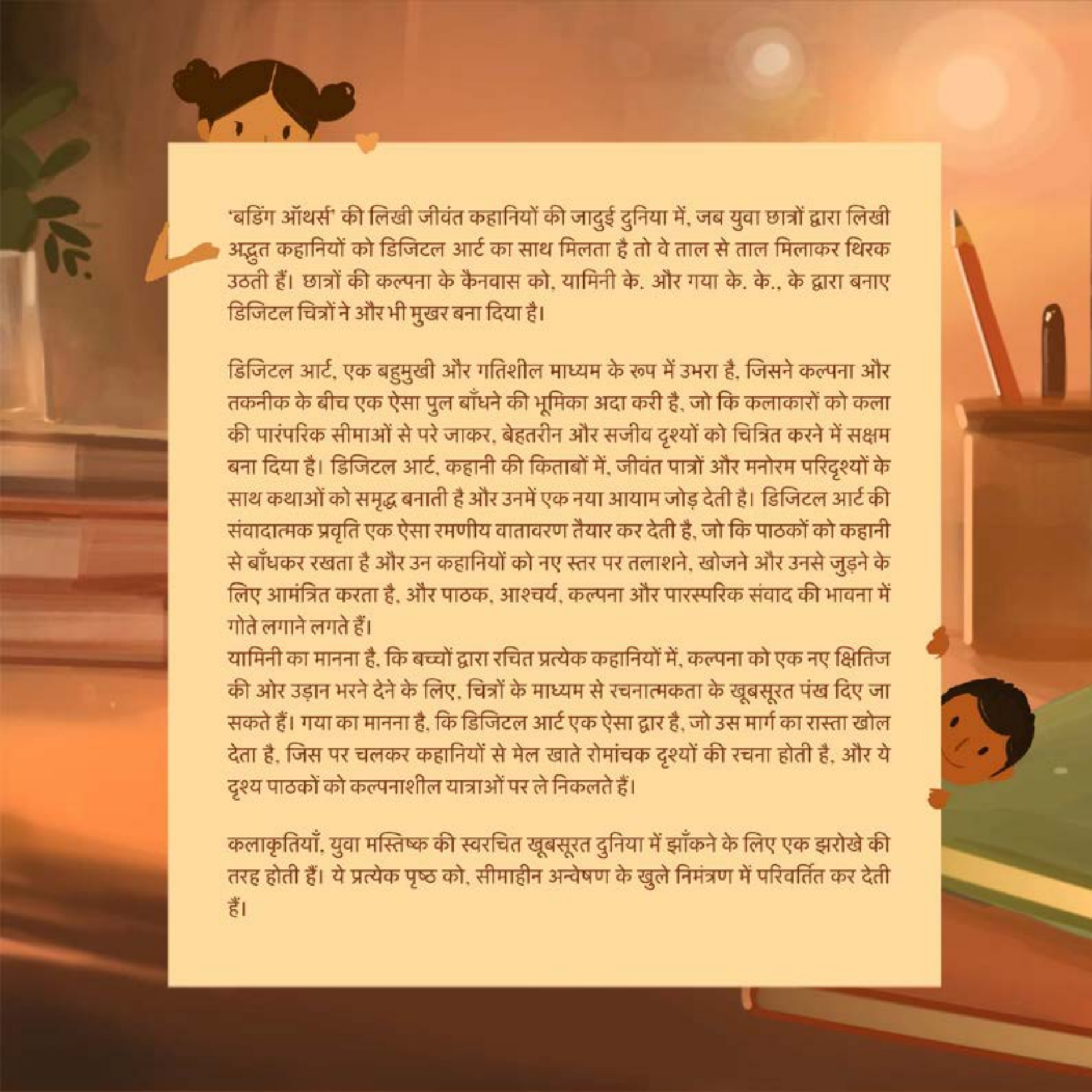

'बडिंग ऑथर्स' की लिखी जीवंत कहानियों की जादुई दुनिया में, जब युवा छात्रों द्वारा लिखी अद्भुत कहानियों को डिजिटल आर्ट का साथ मिलता है तो वे ताल से ताल मिलाकर थिरक उठती हैं। छात्रों की कल्पना के कैनवास को, यामिनी के. और गया के. के., के द्वारा बनाए डिजिटल चित्रों ने और भी मुखर बना दिया है।

डिजिटल आर्ट, एक बहुमुखी और गतिशील माध्यम के रूप में उभरा है, जिसने कल्पना और तकनीक के बीच एक ऐसा पुल बाँधने की भूमिका अदा करी है, जो कि कलाकारों को कला की पारंपरिक सीमाओं से परे जाकर, बेहतरीन और सजीव दृश्यों को चित्रित करने में सक्षम बना दिया है। डिजिटल आर्ट, कहानी की किताबों में, जीवंत पात्रों और मनोरम परिदृश्यों के साथ कथाओं को समृद्ध बनाती है और उनमें एक नया आयाम जोड़ देती है। डिजिटल आर्ट की संवादात्मक प्रवृति एक ऐसा रमणीय वातावरण तैयार कर देती है, जो कि पाठकों को कहानी से बाँधकर रखता है और उन कहानियों को नए स्तर पर तलाशने, खोजने और उनसे जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है, और पाठक, आश्चर्य, कल्पना और पारस्परिक संवाद की भावना में गोते लगाने लगते हैं।
यामिनी का मानना है, कि बच्चों द्वारा रचित प्रत्येक कहानियों में, कल्पना को एक नए क्षितिज की ओर उड़ान भरने देने के लिए, चित्रों के माध्यम से रचनात्मकता के खूबसूरत पंख दिए जा सकते हैं। गया का मानना है, कि डिजिटल आर्ट एक ऐसा द्वार है, जो उस मार्ग का रास्ता खोल देता है, जिस पर चलकर कहानियों से मेल खाते रोमांचक दृश्यों की रचना होती है, और ये दृश्य पाठकों को कल्पनाशील यात्राओं पर ले निकलते हैं।

कलाकृतियाँ, युवा मस्तिष्क की स्वरचित खूबसूरत दुनिया में झाँकने के लिए एक झरोखे की तरह होती हैं। ये प्रत्येक पृष्ठ को, सीमाहीन अन्वेषण के खुले निमंत्रण में परिवर्तित कर देती हैं।